मूल्य : 20/-
घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17

वर्ष : ३
अक्टूबर : २०१८, विक्रमी सम्वत् : २०७५
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५
अंक : ४

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

महात्मा गांधी
(जन्म दिवस : 2 अक्टू.)

लाल बहादुर शास्त्री
(जन्म दिवस : 2 अक्टू.)

महात्मा आनंद स्वामी
(स्मृति दिवस : 24 अक्टू.)

स्वामी समर्पणानंद
(स्मृति दिवस : 28 अक्टू.)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

आर्ष गुरुकुल नोएडा एवं उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता में
विभिन्न गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारिणियां गीत और भाषण प्रस्तुत करते हुए।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य के. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : वीरभोग्या वसुंधरा	2
2.	सत्यार्थ प्रकाश की विलक्षणता	3
3.	येन द्यौरुग्रा	4-5
4.	महाभारत और धर्म	6-7
5.	संध्या व ईश्वरोपासना	8-9
6.	बच्चों को संस्कार दें और...	10
7.	पुराणं पञ्चलक्षणम्	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	वास्तव में यज्ञ ही कामधेनु है	14
10.	मन और व्यक्तित्व का विकास	18
11.	समाचार-सूचनाएं	22-23
12.	सुस्वास्थ्य : क्यों फैल रही है टीबी	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

वीरभोग्या वसुंधरा

भारतीय मनीषियों ने सभी विषयों में मार्गदर्शन किया है। संस्कृत साहित्य की यह सूक्ति सत्य ही प्रतीत होती है। केवल वीर एवं शक्तिशाली लोग ही इस वसुंधरा का उपभोग कर सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि बलवान वीरों के आगे दुनिया नतमस्तक होती है। तुलसीदास जी ने ठीक कहा 'समर्थ को दोष गुसाई' सामर्थ्यवान पुरुष की ओर कोई टेढ़ी नजर से नहीं देख सकता। वीरता का भाव ही किसी देश की स्थायी सत्ता का मूल आधार होता है। वीर ही अपनी बहनों की रक्षा करते हैं। ये वीर ही होते हैं जो अपने देश धर्म पर हंसते-हंसते बलिदान हो जाते हैं। भारत माता को माता के रूप में पूजते हुए अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। भारत माता के वीर सपूतों की एक लम्बी परम्परा है। किंतु आज देश की परिस्थितियों को देखकर हृदय विदीर्ण होता है, मन-मस्तिष्क क्रुंद हो जाता है। गहरी कुंठा में विचार आता है कि क्या यह देश स्वामी दयानन्द, राणा प्रताप, शिवाजी, भगत सिंह का देश है। रात-दिन बड़ी-बड़ी बातें करने वाले इन नेताओं को क्या दिखाई नहीं पड़ता कि आतंकी कुत्तों के हाथों देश के वीर जवान मारे जा रहे हैं। पुलिसवालों को उठाकर उनकी हत्या की जा रही है और हम सिर्फ उनकी निंदा करके रह जाते हैं। ऐसे वीर सपूत लोगों की तो गर्दन काट दी जाती है और हम चुप रह जाते हैं। हम सभी को अपने अंदर देशभक्ति और आत्मबल बढ़ाने के लिए, हमारे नेताओं को ऋषियों का संदेश बार-बार पढ़ना चाहिए- 'वीरभोग्या वसुंधरा' धरती केवल वीरों की ही होती है।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

तुलसीदास जी ने ठीक कहा 'समर्थ को दोष गुसाई' सामर्थ्यवान पुरुष की ओर कोई टेढ़ी नजर से नहीं देख सकता। वीरता का भाव ही किसी देश की स्थायी सत्ता का मूल आधार होता है। वीर ही अपनी बहनों की रक्षा करते हैं। ये वीर ही होते हैं जो अपने देश धर्म पर हंसते-हंसते बलिदान हो जाते हैं। भारतमाता को माता के रूप में पूजते हुए अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। भारत माताके वीर सपूतों की एक लम्बी परम्परा है। कितु आज देश की परिस्थितियों को देखकर हृदय विदीर्ण होता है, मन-मस्तिष्क क्रुंद हो जाता है। गहरी कुंठा में विचार आता है कि क्या यह देश स्वामी दयानन्द, राणा प्रताप, शिवाजी, भगत सिंह का देश है। रात-दिन बड़ी-बड़ी बातें करने वाले इन नेताओं को क्या दिखाई नहीं पड़ता कि आतंकी कुत्तों के हाथों देश के वीर जवान मारे जा रहे हैं। पुलिसवालों को उठाकर उनकी हत्या की जा रही है और हम सिर्फ उनकी निंदा करके रह जाते हैं। ऐसे वीर सपूत लोगों की तो गर्दन काट दी जाती है।

> ईश्वर पूर्णरूप से पवित्र और बुद्धिमान है, उसकी प्रकृति, गुण, और शक्तियां सभी पवित्र हैं, वह सर्वव्यापी, निराकार, अजन्मा, अपार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिशाली, दयालु और न्याययुक्त है, वह दुनिया का रचनाकार, रक्षक, और संघारक है।
>
> अज्ञानी होना गलत नहीं है, अज्ञानी बने रहना गलत है।
>
> वह अच्छा और बुद्धिमान है जो हमेशा सच बोलता है, धर्म के अनुसार काम करता है और दूसरों को उत्तम और प्रसन्न बनाने का प्रयास करता है।
>
> **- महर्षि दयानन्द सरस्वती**

सत्यार्थ प्रकाश की विलक्षणता

आर्य कैं. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

सत्यार्थ प्रकाश ज्ञान का कोश है। मानव मन से अज्ञान का अंधेरा दूर करके ज्ञान का आलोक भरने में यह ग्रंथ अद्वितीय है। न जाने कितने भटके राही इसे पढ़कर मार्ग तलाशने में पूर्णतया सफल रहे हैं। किताबों ने संदेह के घेरे से अपने को निकालने में सफलता प्राप्त की है। इस पर मैंने एक लघु पुस्तिका 'सत्यार्थ प्रकाश एक मूल्यांकन' भी लिखी है जिसे पढ़कर पाठक इसका अवमूल्यन करने से बच सकेंगे। वे देव दयानन्द के कठोर शब्द तो देखते हैं किंतु उसके पीछे उनका हार्दिक हित वे आंखों से ओझल कर देते हैं।

ठीक ऐसे ही जैसे गली से सड़क की ओर जाते दो वर्षीय बालक को सड़क की ओर जाते देखकर एक स्त्री चुप रहती है, दूसरी यह जानते हुए भी सड़क पर जाने से इसका कुचल कर मरना सम्भव है, उसे उधर जाने की ओर प्रेम भरे शब्दों से प्रेरित करती है तथा तीसरी, उसकी माता जब उसे सड़क के निकट पहुंचा देखती है तो गालियां देती उधर दौड़ती है और उसे पकड़ कर दो थप्पड़ लगाती है तथा खींचती हुई वापस लाती है। बालक की हितैषणी उसे सड़क की ओर जाते देखकर चुप रहने वाी थी या प्रेम भरे शब्दों से सड़क की ओर प्रेरित करने वाली या कटुभाषिणी, थप्पड़ मारने आर घसीट कर लाने वाली? थी न अंतिम ही। फिर दयानन्द के मातृतुल्य हितकर हृदय को क्यों नहीं समझते। अभिधामात्र समझने वाला तथा लक्षणा व्यंजना शून्य पाठक अधम कोटि का होता है। विज्ञ तथा तात्पर्य को वही समझ सकता है जो लक्षण तथा व्यंजना को जानता हो। दयानन्द ने यह क्यों नहीं कहा, इसे जो जान जाते हैं उसे उनकी आलोचना अमृत से भी मधुर लगने लगती है। उन्हें न लोकैषणा की परवाह थी न वित्तैषणा की। उन्होंने जो लिखा हितैषणा से लिखा। अंधेरे से सत्य के प्रकाश में लाने वाले दयानन्द, आपको कोटिशः नमन। हम अज्ञानी या अल्पज्ञानी तुझ बहुज्ञ को समझने में भूल कर जाएं, यह संभव है। जग को झुकाने वाले तेरे गुणों तथा कार्यों की ओर हमारा माथा क्यां न झुके। तुझे पुनः नमन।

महर्षि दयानन्द से पूर्व लोग परमात्मा के विभिन्न नामों पर विभिन्न देवता मानते, पूजते तथा भिन्न मानते थे। इसी से शैव, भक्त तथा वैष्णव आदि मत खड़े हुए। पुराणों ने इस विविधता को और हवा दी। किंतु अपने प्रथम समुल्लास में उस झगड़े तथा अज्ञान को दूर करके बताया कि एक ही परमात्मा के गुण कर्म स्वभावानुसार ये विभिन्न नाम हैं। वह एक है अतः तुम भी एक को मानकर एक हो जाओ।

वेदादि शास्त्रों में विराट पुरुष देवादि शब्दों से क्या तात्पर्य लिया जाए- (क) अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक है। (ख) जहां उत्पत्ति, स्थिति प्रलय आदि विशेषण हों वहां अग्नि आदि शब्दों से प्रकृति का ग्रहण करना चाहिए। जहां-जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहां जीव का प्रहण होता है।

दूसरे समुल्लास में बालकों की शिक्षा की ओर मानवों का ध्यान दिलाया। क्योंकि मानवेतर योनि के शिशु स्वाभाविक ज्ञान से काम चला लेते हैं, किंतु मानव के बालक को मानव बनाने के लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। उसके बिना उसका विकास सम्भव नहीं है। यह नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त होता है शिक्षा से। शिक्षा का अर्थ पठन-पाठन नहीं है अपितु स्वस्थ मानव का निर्माण है जो शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा सबसे स्वस्थ हो। इसके लिए उसे खानपान का ज्ञान, शरीर के अंगों को कुचेष्ठा से बचाकर अयोग्य व्यवहार से बचाना, जिससे उनकी सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या द्वेषादि न करें।

सदा सत्य भाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्न वदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो करावे। पांच वर्ष के होने पर बालक-बालिकाओं को देवनागरी तता अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का अभ्यास करायें। इसके पश्चात जिससे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म परमेश्वर, माता-पिता, आचार्य विद्वान, अतिथि, राजा-प्रजा, कुटुम्ब, बंधु, भगिनी भृत्य आदि से कैसे वर्तना चाहिए इन बातों के मंत्र, श्लोकादि को अर्थ सहित कंठस्थ करावें। जिससे संतान किसी धूर्त बहकावे में न आवें और जो-जो विद्या धर्म विरुद्ध भ्रांति जा में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूतप्रेत आदि मिथ्या बातों में विश्वास न हो। महर्षि ने प्रमाण सहित मृतक शरीर को 'प्रेत' तथा उसे जलाने के पश्चात भूतकालस्थ होने से 'भूत' बताया तथा फलित ज्योतिष एवं शीलता आदि को मिथ्यागुण बताया। OO

येन द्यौरुग्रा

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के पांचवे मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

स्वस्थ संगीत, वाद्य, काव्यालोचन , विद्याविचार, दर्शनशास्त्र का आलोचन मूर्खों के भाग्य में नहीं है। उन्हें तो झगड़ा, लड़ाई, व्यसन, मद और निद्रा ही प्रिय होती है।

आध्यात्मिक सुख : सुख की एक स्थिति इंद्रियातीत इंद्रियों की अनुभूति से ऊपर का सुख है। काम-क्रोध-लोभ आदि की तृप्ति का एक सुख है। उसी प्रकार का सुख रूप-रस-गंध-स्पर्श-श्रवण आदि का है। यह मनुष्य और पशु आदि में समान स्तर या पशुवृत्ति में अधिक सघन है। विवेक, भोग, बुद्धि विलास मनुष्य में उच्चस्तर का है। मनुष्य की अनुमति में यह अंत:करण-चतुष्टय, मन बुद्धि, चित्त आदि के द्वारा ग्राह्य है।

इस प्रविवेक भोग से भी उच्चस्तर का सुख तब मिलता है जब अन्तःकरण बाह्य विषयों से पृथक होकर, इंद्रियों की सीमा से ऊपर उठकर आत्मस्थ होकर परमेश्वर के सान्निध्य में रमता रहता है। एक प्रसिद्ध श्लोक पर विचार करें-

समाधि निर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत् सुखं भवेत्। न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदतः करणेन गृह्यते।। मैत्रा.उप. ४-४-९

जब मनुष्य का चित्त निर्मल हो जाता है और वह समाधिस्थ होकर परमात्मचिंतन में लीन हो जाता है तो उसके परमात्मस्थ आत्मा में जो सुख होता है, उसका बखान वाणी नहीं कर सकती। वह तो अंत:करण की अनुभूति का विषय है। श्वेताश्वतर उपनिषद् का भी एक श्लोकार्थ देखिए-

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीराः, तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।। श्वेता. ६-१२

जो साधक परमात्म चिंतन में आत्मस्थ प्रभु का अनुभव करते हैं उन्हीं को शाश्वत चिरस्थायी सुख की अनुभूति होती है, अन्य किसी को नहीं।

आजकल कोई श्वास का ध्यान कराते हैं, कोई प्रकाश का ध्यान कराते हैं। यहां ध्यान करने वाले की चंचलता-चिंता, परेशानी कम होगी, अतः शांति भी मिलेगी, सुख भी मिलेगा। किंतु प्रभु के ध्यान में आत्मस्थ साधक को श्रेष्ठतम सुख की उपलब्धि होगी।

योगेश्वर श्रीकृष्ण का विश्लेषण : श्रीमद्‌भगवद् गीता में सुख की मीमांसा में सुख को १.सात्विक राजस और तामस तीन प्रकारों में बांटा है। २. योग साधना से प्राप्त उत्तम सुख का अलग ही वर्णन है। तीन प्रकार के सुख-

सुखं त्विदाना त्रिविधं श्रृण में भरतर्षभ। अभ्यासाद् रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति।। १८-३६

हे अर्जुन! मुझसे तीन प्रकार के सुखों का वर्णन सुनो। यहां अभ्यास से, साधना से, सुख की प्राप्त और दुख की निवृत्ति होती है। (क) सात्विक सुख-

यत्तदग्रे विषमिव, परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धि प्रसादजम्।। १८-३७

सात्विक सुख का आधार तपस्या, संयम, साधना, परिश्रम आदि है, अतः सात्विक सुखों की प्राप्ति के आरम्भ में तपस्या, संयम आदि अप्रिय कष्टकर विष के समान लगते हैं। किंतु परिणाम अमृत के समान प्रिय एवं सुखदायी होता है। सात्विक सुख में आत्मा बुद्धि का प्रसाद-आनंद, चैतन्य का विकास होता

यह संसार आकस्मिक है, इस संबंध में एक औरसात्विक सुख का आधार तपस्या, संयम, साधना, परिश्रम आदि है, अतः सात्विक सुखों की प्राप्ति के आरम्भ में तपस्या, संयम आदि अप्रिय कष्टकर विष के समान लगते हैं। कितु परिणाम अमृत के समान प्रिय एवं सुखदायी होता है। सात्विक सुख में आत्मा बुद्धि का प्रसाद-आनंद, चैतन्य का विकास होता है। मद आदि के सेवन से बुद्धि का लोप और आत्मा की अधोगति होती है। राजस सुख : गीता में श्रीकृष्ण राजस सुख का वर्णन निम्न श्लोक में कर रहे हैं- विषयेन्द्रिय संयोगाद् यत्तदग्रेऽमृतोपमम्। परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्।। राजस सुख विषय औैर इंद्रिय के सम्पर्क होने से उत्पन्न होता है। राजस सुख इंद्रियगामी होता है, आरम्भ में बड़ा प्यारा लगता है, कितु उसका परिणाम विषतुल्य विनाशकारी होता है। 'भोगे रोग भयम्' भोगी तो रोग का शिकार होगा ही। तामस सुख : तामस सुख का वर्णन निम्न श्लोक में है- यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्य प्रमादोत्थ मतत्तामसमुदाहृतम्।। तामस सुख आगे भी, पीछे भी, आरम्भ में और परिणाम में भी आत्मा का पतन करने वाला होता है। निद्रा, आलस्य और प्रमाद से तामस सुख उत्पन्न होता है।

है। मद आदि के सेवन से बुद्धि का लोप और आत्मा की अधोगति होती है।

(ख) राजस सुख : गीता में श्रीकृष्ण राजस सुख का वर्णन निम्न श्लोक में कर रहे हैं-

विषयेन्द्रिय संयोगाद् यत्तदग्रेऽमृतोपमम्। परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्।। गी. १८-२८

राजस सुख विषय और इंद्रिय के सम्पर्क होने से उत्पन्न होता है। राजस सुख इंद्रियगामी होता है, आरम्भ में बड़ा प्यारा लगता है, किंतु उसका परिणाम विषतुल्य विनाशकारी होता है। 'भोगे रोग भयम्' भोगी तो रोग का शिकार होगा ही।

(ग) तामस सुख : तामस सुख का वर्णन निम्न श्लोक में है-

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्य प्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्।। गी. १८-१९

तामस सुख आगे भी, पीछे भी, आरम्भ में और परिणाम में भी आत्मा का पतन करने वाला होता है। निद्रा, आलस्य और प्रमाद से तामस सुख उत्पन्न होता है।

मनुष्य जब प्रभु भक्ति के मार्ग पर चलता हुआ साधना के पथ पर अग्रसर होता है तो उसे उच्च कोटि का सात्विक सुख मिलता है। यागेश्वर श्रीकृष्ण के निम्नश्लोकों पर विचार करें-

सुखमात्यन्तिकं यत्तद् बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।। यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।। गी. ६-२१-२२

भावार्थ यह हुआ कि साधक जब अपनी साधना में सफल होने लगता है तो इंद्रियजन्य सुखों से ऊपर उठकर, इंद्रियातीत सुखों को बुद्धि द्वारा, अंतःकरण द्वारा 'विषयेन्द्रिय संयोगात्' राजस-भोग प्रधान सुख हुआ। अंतःकरण द्वारा ग्राह्य सुख 'स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते। यह उत्तम सुख की स्थिति हुई।

'नाकः' दुःखरहित मोक्ष सुख इससे भी ऊपर का सुख होगा। जब तक स्थूल शरीर है तब तक दुख का अत्यंताभाव नहीं होगा। दुख का अत्यन्ताभाव तो मोक्ष में ही सम्भव है। **'तदत्यन्त विमोक्षोपवर्गः'** न्याय १-१-२२ **दुःख जन्म प्रवृति दोष मिथ्या ज्ञानानामुत्तरोत्तरा पाये तदन्तरापायादपवर्गः। अथ त्रिविध दुःखात्यन्त निवृतिरत्यन्त पुरुषार्थः।।** सांख्य १-१

तैत्तिरीय उपनिषद् की ब्रह्मानंदवल्ली के अष्टम अनुवाक में आनंद के भी कई स्तर बताये गये हैं। आनंद के स्तरों का वर्णन निश्चय ही विचार रमणीय है। अधिक तो उस कोटि के साधक ही सम सकते हैं।

एतमानन्दमयमात्मानमुप संक्रामति

अर्थात् आनंदमय आत्मा को प्राप्त होता है। यह सम्पूर्ण आनंद ब्रह्म के आश्रय है। अब अगले प्रसंग पर विचार करते हैं- जगदीश्वर ने सुख और दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है। येन स्वः स्तभितं येन नाकः- परमेश्वर ने सांसारिक सुख और मोक्ष सुख को धारण किया है।

सांसारिक सुख : ऊपर की विवेचना में यह सुस्पष्ट है कि सांसारिक सुख इंद्रिय और अर्थ (वस्तु) या विषय इंद्रियों के सन्निकर्ष य संयोग से उपलब्ध होता है। मधु में मिठास है, पुष्प में सुगंध है। रसना का मधु से सम्पर्क स्वादसुख देता है। पुष्प का नासिका से सम्पर्क गंध सुख देता है। ऐसी ही स्थिति अन्य विषयों पदार्थों के सम्पर्क से अन्य अपेक्षित इंद्रियों द्वारा निश्चित सुख की उपलब्धि होती है। चक्षु से रूप का सुख मिलेगा, रसना से रस का सुख मिलेगा। यह परमात्मा की व्यवस्था है। इस सुख की उपलब्धि का आधार परमात्मा की सृष्टिकला है। कान आकाश प्रधान है और आकाश के गुण शब्द को ग्रहण करता है। अपने प्रधान उपादान के गुणों को अन्य इंद्रियां भी ग्रहण करती हैं। चक्षु का प्रधान उपादान अग्नि है, वह अग्नि के गुण रूप को ग्रहण करने में समर्थ है। रसना जल प्रधान और रसोपलब्धि में समर्थ है। त्वचा वायु उपादान के कारण स्पर्श के ग्रहण करने में सक्षम है। ये सारी व्यवस्थाएं प्रभु की सृष्टि के आधार पर प्रभु ने ही की है। गुड़ मीठा है, फूल सुगंध देता है, ऊँषा ज्यौतिष्मती का रूप मनभावन है इत्यादि सभी पदार्थों की विशेषताएं न उन पदार्थों की करतूत है और न उनका सुख उपलब्ध करने वाले भोक्ता समुदाय की ही कृति है। सुख, सुख का उपादान और सुख की उपलब्धि कराने वाला उपकरण, उनकी निश्चित व्यवस्था, सबका आधार प्रभ है। सुखों का आधार परमेश्वर है। इतना 'स्वःस्तभितम्' के संबंध में।

येन नाकः स्तभितम्- जिसने दुःखरहित मोक्ष सुख को धारण किया है। मोक्ष की अवस्था में इंद्रियां- शरीर आदि रहते नहीं। सो सुख की उपलब्धि के भौकि उपकरणों का अभाव हो जाता है। साथ ही सुख को अपने आश्रय रखने वाले स्थूल-भौतिक उपादान भी नहीं रहते। रहा है तो केवल एक जीवात्मा जो अपने सामर्थ्य से युक्त रहता है। इसलिए श्री स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं 'उसके (जीवात्मा के) सत्य संकल्पादि स्वाभाविक गुण और सब सामर्थ्य रहते हैं, परंतु भौतिक संग नहीं रहता....' मोक्ष में जीवात्मा अपने सामर्थ्य से युक्त रहता हुआ, परमेश्वर में विचरण करता हुआ ब्रह्मानन्द की उपलब्धि कराता है।

OO

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221

महाभारत और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

(गतांक से आगे...)

चीखने वाले द्रौपदी, युधिष्ठिर के भाई और उसके साथी थे युधिष्ठिर ने देवदूत से कहा- तुम लौट आओ। मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए, मैं द्रौपदी और भाइयों के साथ नरक में ही रहूंगा। देवदूत ने जाकर उसका संदेश इंद्र को सुना दिया। इंद्र, धर्म और कुछ देवता उसके पास पहुंचे, और उसे कहा- तुम्हें पूर्ण रूप में शोधने के लिए इतना ही पर्याप्त था कि तुम नरक को देख लो, तुम्हारे संबंधियों और साथियों के पूर्ण-शोधन के लिए उनका थोड़े समय के लिए यहां ठहरना आवश्यक था। अब तुम सब स्वर्ग में चलो।

धर्मदेव ने कहा- बेटा! तुम्हारी धर्म परायणता को देख कर मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह तीसरी परीक्षा है जो मैंने तुम्हारी ली है। इस बार भी मैं तुमको तुम्हारे स्वभाव से विचलित नहीं कर सका। (स्वर्गारोहणपर्व: १,२)

हम पहाड़ पर चढ़ते धीरे-धीरे हैं, थोड़ा चलकर विश्राम के लिए बैठ भी जाते हैं। किनारे से पांव फिसल पड़े तो खड्डे की तह तक पहुंचने के लिए कोई यत्न करना नहीं पड़ता, पृथिवी की आकर्षण-शक्ति यह सब कुछ हमारे लिए कर देती है, हां यह हो सकता है कि नीचे गिरने में हमारी हड्डी पसलियां टूट जाएं। नैतिक उन्नति और पतन में भी स्थिति ऐसी ही होती है। युधिष्ठिर की परीक्षाओं में प्रश्न यही था।

पहली परीक्षा में उसने पारिवारिक सुख को धर्म के लिए कुरबान कर दिया, अपने सगे भाई के स्थान पर सौतेले भाई को जिलाना चाहा, ताकि दोनों रानियां पुत्रवती बनी रहें। दूसरी परीक्षा में लौकिक सुख के ही नहीं स्वर्ग के सुख को भी अस्वीकार कर दिया, क्योंकि स्वर्ग जाने में भक्त कुत्ते का साथ छोड़ना पड़ता था। तीसरी परीक्षा में वह एक और लम्बा पग बढ़ा और स्वर्ग के स्थान में नरक में रहने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि वहां उसे द्रौपदी और भाइयों के साथ रहने का अवसर मिल सकता था। स्वर्ग धर्म ने भी माना कि वह अपनी परीक्षाओं में पूरा उतरा है। स्व से ऊपर उठने के अपूर्व उदाहरण उसने प्रस्तुत किये।

अभी तक धर्मदेव से परिचित हुए हैं। धर्मदेव एक चेतन व्यक्ति हैं। जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह प्रायः कविता की भाषा है। अब हम धर्म को उसने प्रचलित नैतिक अर्थों में देखेंगे।

हमारे निर्णय दो प्रकार के होते हैं- घटना-संबंधी और मूल्य-संबंधी। मैं कहता हूं 'एक बालक 10 मिनट तक अपनी माता को मारता रहा' यह एक घटना का वर्णन है। मैं फिर कहता हूं- 'उस बालक ने बुरा का किया'। यह कार्य के मूल्य प्रा निर्णय है, मूल्य का निर्णय किसी मापक की सहायता से होता है। कर्मों को शुभ-अशुभ कहने के लिए हम धर्म को मापक के रूप में बर्तते हैं। जो काम धर्मानुकूल है, वह शुभ हैं, जो धर्म के प्रतिकूल है, वह अशुभ है। 'महाभारत' के अनेक स्थलों में शुभ और अशुभ कर्मों की बाबत कहा है। यहां हम सीमित उद्धरण ही दे सकेंगे।

जब हम भिन्न प्रकार के कर्मों की जांच करना चाहते हैं तो उन्हें भिन्न स्तरों पर रखते हैं, कोई लक्ष्य के अधिक निकट होता है, कोई कम निकट। इस प्रकार का विवाद सत्य और अहिंसा के संबंध में होता है। कुछ लोग कहते हैं- 'सत्य से परे कोई धर्म नहीं', कुछ और कहते हैं अहिंसा परम धर्म है। सामाजिक जीवन का आधार विचारों के आदान-प्रदान पर निर्भर है। जो कुछ मन में है, वही बाणी बोले, यह सत्य है। इसके बिना सामाजिक व्यवहार चल नहीं सकता। सामाजिक जीवन व्यक्ति के कल्याण का मुख्य साधन है।

हरेक मनुष्य का अधिकार है कि वह सुरक्षित जीवन बिता सके, कोई दूसरा उसे हानि न पहुंचाए। सारा समाज उसे ऐसी हानि से बचा रहने में सहायता देता है। यह अहिंसा या न्याय की मांग है। जो लोग सत्य को महत्व देते हैं वे समाज के अस्तित्व को प्रमुख रखते हैं। जो अहिंसा य न्याय को महत्व देते हैं, वे व्यक्ति के जीवन-अधिकार को प्रमुख रखते हैं। कर्णपर्व में कृष्ण ने अपने विचार प्रकट किए हैं।

'सत्य से परे कोई धर्म नहीं', कुछ और कहते हैं अहिंसा परम धर्म है। सामाजिक जीवन का आधार विचारों के आदान-प्रदान पर निर्भर है। जो कुछ मन में है, वही बाणी बोले, यह सत्य है। इसके बिना सामाजिक व्यवहार चल नहीं सकता। सामाजिक जीवन व्यक्ति के कल्याण का मुख्य साधन है। हरेक मनुष्य का अधिकार है कि वह सुरक्षित जीवन बिता सके, कोई दूसरा उसे हानि न पहुंचाए। सारा समाज उसे ऐसी हानि से बचा रहने में सहायता देता है। यह अहिंसा या न्याय की मांग है। जो लोग सत्य को महत्व देते हैं वे समाज के अस्तित्व को प्रमुख रखते हैं। जो अहिंसा य न्याय को महत्व देते हैं, वे व्यक्ति के जीवन-अधिकार को प्रमुख रखते हैं। कर्णपर्व में कृष्ण ने अपने विचार प्रकट किए हैं।

सत्य और अहिंसा : कृष्ण ने अर्जुन से कहा- 'धर्म और अधर्म के तत्व का निर्णय करने के लिए अनेक लक्षण शास्त्र में बताए गये हैं, परंतु कहीं-कहीं बुद्धि और अनुमान के द्वारा भी सूक्ष्म धर्म का निर्णय करना पड़ता है। शास्त्र में प्राय: सब कुछ बता दिया गया है, परंतु बहुत सी धर्म की विशेष बातें और अवस्थाएं ऐसी हैं कि वैसा प्रसंग न आने पर शास्त्र में उनका निर्णय नहीं किया गया। ऐसी अवस्थाओं में अवश्य ही अनुमान से काम लेना चाहिए।

मैं उसी को धर्म मानता हूं जो अहिंसा का प्रतिपादक हो। जो लोग किसी का धन छीनना चाहे, उन्हें उसका पता न बतलाया जावें, यही निश्चित धर्म है। चुप रहने से काम चल जाए तो अच्छा है, न चले तो झूठ बोलना ही भला है, वहां पर मिथ्या ही सत्य है। प्राण संकट, विवाह, सारी जाति के हित और दिल्लगी में झूठ बोलना दूषित नहीं। प्राण संकट में झूठ बोलना किसी निर्दोष पुरुष की जान बचाना है, कचहरी में झूठी गवाही देना शामिल नहीं। एक कथन के अनुसार ' प्रेम और युद्ध में कुछ भी अनुचित नहीं।' विवाह तो दीर्घकाल के प्रेम का आरम्भ है। कृष्ण ने इस संबंध में असत्य को क्षमा-योग्य कहा है। जाति के अहित को रोकने के लिए राजनीति के भक्त झूठ करने में बुराई नहीं समझते। हंसी-दिल्लगी की स्थिति भिन्न हैं। झूठ बोलने वाला अपने हित में दूसरों के अहित को बुरा नहीं समझता, दिल्लगी में हित-अहित का प्रश्न ही नहीं उठता, न भविष्य की ओर संकेत होता है। वहां तो वर्तमान को हंसी-खुशी में गुजारना एक मात्र उद्देश्य होता है, और इसमें सभी एक समान भाग लेते हैं।

शास्त्र में प्रायः सब कुछ बता दिया गया है, परंतु बहुत सी धर्म की विशेष बातें और अवस्थाएं ऐसी हैं कि वैसा प्रसंग न आने पर शास्त्र में उनका निर्णय नहीं किया गया। ऐसी अवस्थाओं में अवश्य ही अनुमान से काम लेना चाहिए। मैं उसी को धर्म मानता हूं जो अहिंसा का प्रतिपादक हो। जो लोग किसी का धन छीनना चाहे, उन्हें उसका पता न बतलाया जावें, यही निश्चित धर्म है। चुप रहने से काम चल जाए तो अच्छा है, न चले तो झूठ बोलना ही भला है, वहां पर मिथ्या ही सत्य है। प्राण संकट, विवाह, सारी जाति के हित और दिल्लगी में झूठ बोलना दूषित नहीं। प्राण संकट में झूठ बोलना किसी निर्दोष पुरुष की जान बचाना है, कचहरी में झूठी गवाही देना शामिल नहीं।

धर्म के आठ मार्ग : शौनक एक ब्राह्मण विद्वान था, संख्या और योग में निपुण था। उसने युधिष्ठिर को शारीरिक और मानसिक दुखों की बाबत बताकर, धर्म आठ मार्गों या अकारों की बाबत कहा। उसने कहा- शारीरिक दुख के तीन कारण है- व्याधि या रोग, अधिक श्रम, अनिष्ठ का आना और इष्ट का चला जाना। व्याधि उचित प्रतिकार के द्वारा दूर हो सकती है, उसकी पीड़ा विचार के द्वारा दूर हो जाती है। मानसिक दुखों की उत्पत्ति अधिकांशत: स्नेह से होती है। स्नेह केवल दुख का ही कारण नहीं, वह डर, शोक, हर्ष का भी कारण हैं, स्नेह के कारण मनुष्य को अधिक श्रम भी करना पड़ता है। विषयासक्ति, थोड़ी भी हो, तो धर्म और अर्थ की प्रवृत्तियों को जला देती है।

अभिमान छोड़कर निम्नांकित धर्मों का आचरण करना चाहिए- तप, जप, सत्य, इंद्रिय दमन, क्षमा, दान, अध्ययन और संतोष। ये आठ धर्म के मार्ग हैं इनमें तप, जप, दान और अध्ययन पितृ लोक की प्राप्ति के साधन हैं। सत्य, इंद्रिय दमन, क्षमा और संतोष देवलोक में जाने के उपाय हैं। हरेक मनुष्य को चाहिए कि शुद्ध चित्त के साथ इन आठ प्रकार के धर्मों का पालन करता रहे। (वनपर्व : २)

शौनक ने पितृलोक और देवलोक की स्थिति में भेद किया है। साधारण विचार भी देवलोक को ऊंचे स्तर पर रखता है। शौनक ने अपने आठ भागों में यह भेद किस आधार पर किया है?

नैतिक विवेचन में हम आचरण और आचार में भेद करते हैं। आचरण एक दृष्टि वस्तु हैं, जिसे कार्य करने वाले के अतिरिक्त दूसरे भी देख सकते हैं। एक व्यापारी रविवार के दिन भूखों को खाना खिलाता है उन्हें कुछ पैसे भी देता है। यह उसका आचरण है, हरेक इसे देख सकता है। वह ऐसा करता क्यों है? किया के प्रेरक को कोई दूसरा स्पष्ट रूप में देख नहीं सकता। शायद पूर्ण रूप में स्वयं उसे भी इसका ज्ञान नहीं। उसका प्रेरक नीचे लिखे में से कोई हो सकता है- १. उसे दान के महत्व में विश्वास है, वह सार्वजनिक सेवा से परे नहीं देखता। २. वह विश्वास करता है कि दान का फल इस लोक में या परलोक में उसे मिल जाएगा, वह अपना रुपया यों ही फेंक नहीं रहा। ३. वे चाहता है कि नगर में उसकी साख बन जाए, और उचित समय पर अन्य व्यापारियों से या बैंकों से उधार लेकर नगर से चलता बने।

किसी मनुष्य की नैतिक स्तर की बाबत निर्णय करते हुए हम उसके आचरण की अपेक्षा उसके आचार को अधिक महत्व देते हैं। आरम्भ में आदेश होता है- 'ऐसा करो', पीछे आदेश होता है- 'ऐसा बनो'।

(शेष अगले अंक में) OO

संध्या व ईश्वरोपासना

मनमोहन कुमार आर्य

संध्या भली भांति ईश्वर का ध्यान करने को कहते हैं। यही ईश्वर की पूजा कहलाती है। इससे भिन्न प्रकार से यदि ईश्वर की पूजा आदि करते हैं तो जो लाभ ईश्वर के सत्य स्वरूप का ध्यान व चिंतन करने से मिलता है वह अन्य प्रकार से या तो मिलता नहीं या बहुत कम मिलता है। ज्ञानी व विज्ञान कर्मी जानते हैं कि यदि हम कोई भी काम करें और वह ज्ञान विज्ञान के अनुकूल न हो तो सफलता नहीं मिलती। इसी प्रकार से यदि हम ईश्वर की पूजा, ध्यान व उपासना आदि करते हैं तो हमें उसकी विधि के ज्ञान के अनुरूप होने पर पहले विचार कर लेना चाहिये।

ईश्वर का ध्यान व संध्या करने से पूर्व हमें ईश्वर व आत्मा के विषय में ज्ञान होना चाहिये। ईश्वर क्या है? इस प्रश्न का एक उत्तर यह है कि ईश्वर वह है जिसने इस सारी सृष्टि को बनाया है, जो इसका पालन व संचालन कर रहा है, इसे सृष्टि को धारण करना भी कहते हैं तथा जो इस सृष्टि की अवधि वा आयु पूर्ण होने पर इसकी प्रलय करता है। ईश्वर ने इस सृष्टि, इसके लोक-लोकान्तर ही नहीं बनाये अपितु हमारी पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल, आकाश आदि पदार्थों की उत्पत्ति सहित समस्त अन्न, फल, वनस्पतियों व औषधियों एवं गाय आदि प्राणियों को भी उसी ने बनाया है।

ईश्वर का सत्य स्वरूप सृष्टि के आरम्भ में सबसे प्रथम ईश्वर ने ही वेदों के द्वारा प्रकाशित व उद्घाटित किया था। विचार करने पर हम पाते हैं कि यदि ईश्वर वेदों का प्रकाश न करता तो हम ईश्वर, जीवात्मा सहित अन्य पदार्थों का ज्ञान कदापि प्राप्त नहीं कर पाते। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने वेदों का प्रकाश कर हमें भाषा प्रदान की व हमें बोलना भी उसी ने सिखाया है। वेदों के आधार पर ईश्वर का जो स्वरूप हमारी दृष्टि में आता है उसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋगवेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय सहित लघु ग्रन्थों स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, आर्योद्देश्यरत्न माला एवं आर्यसमाज के दूसरे नियम में भी किया है। समूचे वेद भाष्य में भी हमें ईश्वर के यथार्थ व सत्य स्वरूप के दर्शन होते हैं। हम यहां आर्यसमाज के दूसरे नियम के अनुसार पाठकों के लिए ईश्वर का सत्य स्वरूप, जैसा कि वेदों से प्राप्त होता है, उद्धृत कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।' ऋषि दयानन्द जी ने इन शब्दों में ईश्वर का सत्यस्वरूप बताकर इसी स्वरूप वाले ईश्वर की उपासना का करना आवश्यक बताया है।

वेद यह भी बताते हैं कि इस सृष्टि की रचना व उत्पत्ति ईश्वर ने अपने किसी निजी प्रयोजन के लिए नहीं की है अपितु अपनी शाश्वत प्रजा चेतन जीवात्माओं को सुख पहुंचाने के लिए की है। ईश्वर ने हमारे कर्मानुसार हमें मनुष्य बनाया है। हम इस जीवन में जो सुख भोग रहे है, अतीत में भोग चुके हैं व आगे भी भोगेंगे उनका आधार व कारण परम पिता परमेश्वर ही है। इस जन्म से पूर्व भी अनंत बार हम जन्म लेकर इसी प्रकार से व इससे भी अधिक सुख भोग चुकें हैं और भविष्य में अनंत काल तक भोगेंगे।

ज्ञानी व विज्ञान कर्मी जानते हैं कि यदि हम कोई भी काम करें और वह ज्ञान विज्ञान के अनुकूल न हो तो सफलता नहीं मिलती। इसी प्रकार से यदि हम ईश्वर की पूजा, ध्यान व उपासना आदि करते हैं तो हमें उसकी विधि के ज्ञान के अनुरूप होने पर पहले विचार कर लेना चाहिये। ईश्वर का ध्यान व संध्या करने से पूर्व हमें ईश्वर व आत्मा के विषय में ज्ञान होना चाहिये। ईश्वर क्या है? इस प्रश्न का एक उत्तर यह है कि ईश्वर वह है जिसने इस सारी सृष्टि को बनाया है, जो इसका पालन व संचालन कर रहा है, इसे सृष्टि को धारण करना भी कहते हैं तथा जो इस सृष्टि की अवधि वा आयु पूर्ण होने पर इसकी प्रलय करता है। ईश्वर ने इस सृष्टि, इसके लोक-लोकान्तर ही नहीं बनाये अपितु हमारी पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल, आकाश आदि पदार्थों की उत्पत्ति सहित समस्त अन्न, फल, वनस्पतियों व औषधियों एवं गाय आदि प्राणियों को भी उसी ने बनाया है।

इसके बदले में हम ईश्वर को अपनी कोई वस्तु क्या दे सकते हैं? यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह जब किसी भी मनुष्य से उपकृत होता है तो वह उसका धन्यवाद करता है। वह किसी का अहसान लेना नहीं चाहता और यदि लेना पड़ता है तो उसकी कीमत दिया करता है। परमात्मा ने हम पर इतनी कृपा की है कि जितनी अन्य कोई नहीं कर सकता। अत: हम ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हैं और सभी को रखना भी चाहिये। कृतज्ञता का भाव रखने से हमारे अहंकार का नाश होता है। यह ज्ञातव्य है कि अहंकारी मनुष्य का नाश उसके अहंकार के कारण ही होता है।

अहंकार कोई अच्छा मानवीय गुण नहीं है। इसका सभी को त्याग करना ही चाहिये। अहंकार के विपरीत विनयशीलता का गुण होता है। मनुस्मृति में एक प्रामाणिक बात कही गई है कि अभिवादन-शील मनुष्य जो प्रति दिन व नियमित रूप से ज्ञान व आयु में वृद्ध लोगों की सेवा किया करता है उसकी आयु, विद्या, यश व बल बढ़ता है। मनु जी के यह विचार समाज में प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध होते हुए पाये जाते हैं। अत: आयु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति के लिए मनुष्यों को अहंकार का नाश कर विनयशील स्वभाव को धारण करना चाहिये। हम ईश्वर के प्रति मनुष्य के कर्तव्यों पर चर्चा कर रहे हैं। परमात्मा ने हमारे लिए सृष्टि बनाई, हमें माता-पिता के द्वारा सुख का सर्वोत्तम साधन यह मनुष्य शरीर दिया, हमारे लिए संसार में भोजन, वस्त्र, आवास आदि के लिए नाना पदार्थ बनाये और उनका उपयोग करने के लिए वेदों के द्वारा हमें शिक्षा दी, अत: हमारा कर्तव्य है कि हम उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हुए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना किया करें। ऐसा करने से ही हम अपनी हानि से बच सकते हैं और हमें अनेक प्रकार से लाभ पहुंचता है। अत: सभी मनुष्यों को ईश्वर की उपासना वा संन्ध्या आदि कर्म यथासमय अर्थात् प्रात: व सायं की संध्या वेला में अवश्यमेव करने चाहिये।

संध्या कैसे करें? इसके लिए हमें वेद व वेदानुकूल ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को बताने वाले ऋषि व आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। वैदिक विद्वानों द्वारा लिखे गये ईश्वर विषयक ग्रंथों का अध्ययन करने पर भी हमारी आत्मा ईश्वर के गुणों को अपनी आत्मा से ग्रहण करती है। हम जब ईश्वर के सत्य गुण-कर्म-स्वभाव को बताने वाले ऋषियों के ग्रंथों का अध्ययन करते हैं तो हमारी आत्मा उसे पढ़कर व जानकर उसके सत्य होने की पुष्टि करती है। यह ध्यान रहे कि अध्ययन करते हुए हमें अपने विवेक को जाग्रत रखना होता है। किसी भी बात को आंखे बंद कर स्वीकार नहीं करना चाहिये। बुद्धि से सत्य व असत्य का विवेचन करके ही सत्य को स्वीकार करना चाहिये। ऐसा करने से ही हम सत्य को जान पाते हैं और हमें उसके अनुरूप क्रियायें करने से लाभ होता है। स्वाध्याय के लिए सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋगवेदादिभाष्यभूमिका, योगदर्शन, ऋग्वेद ज्योति, यजुर्वेदज्योति, अथर्ववेदज्योति, श्रुति सौरभ आदि ग्रंथों सहित ऋषि दयानन्द व आर्य विद्वानों के वेदभाष्य पठनीय हैं। इन्हें पढ़कर ईश्वर का सत्य स्वरूप ज्ञात हो जाता है, सारी शंकायें व भ्रान्तियां दूर हो जाती है और ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने की प्रेरणा मिलती है।

ईश्वर की उपासना न केवल विद्वानों को ही करनी चाहिये अपितु सभी मनुष्यों को भी करनी चाहिये। ईश्वर की उपासना से ईश्वर का सानिध्य प्राप्त होता है। हमारे बुरे गुण, कर्म व स्वभाव में सुधार होता है। ईश्वर ज्ञान स्वरूप व आनन्द स्वरूप है। संध्या व उपासना करने से हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है और दु:ख दूर होकर आनन्द की उपलब्धि होती है। इन लाभों को प्राप्त करने के लिए हमें ईश्वर की भक्ति वा संध्या अवश्य करनी चाहिये। संध्या करने से हमें सत्य कर्मों को करने की प्रेरणा मिलने सहित बुरे कर्मों के प्रति अनिच्छा भी उत्पन्न होती है जिससे हमारा यह जीवन व परजन्म भी सुधरता है। ईश्वर की उपासना के लिए ऋषि दयानन्द जी ने 'संध्या' नाम की एक पुस्तक लिखी है। इसे पढ़कर ही सबको संध्या करनी चाहिये। संध्या से पूर्व व संध्या करते हुए संध्या के अर्थों पर भी दृष्टि डालनी चाहिये व उनके अनुसार चिंतन व ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ○○

प्रेरक विचार

- सबसे अच्छा गुण क्षमा कर देना है।
- अनेक कामनाओं वाला सदा दुखी रहता है। कामनाओं को मिटा दो चिंता स्वयं मिट जाएगी।
- दुखों से छुटकारा पाने के लिए विषयों को और सांसारिक कामनाओं को छोड़ दो, यह दोनों ही दुखों का स्रोत है।
- मधुर वाणी से ही सारे संसार को वश में किया जा सकता है।
- मृत्यु सबकी निश्चित है बुरे कर्मों का परिणाम बुरा होता है। सम्पत्तियां किसी की स्थिर नहीं रहतीं। कर्म फल भोगने में कोई किसी का साझीदार नहीं फिर भी दुष्कर्म करते हैं। यह आश्चर्य की बात है।

बच्चों को संस्कार दें और उनके चरित्र का निर्माण करें

हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम सभी अपनी संतानों को अच्छे संस्कार दें। संस्कार देना भी माता-पिता और आचार्यों व शिक्षकों का कर्त्तव्य है। बच्चों में हम जैसा भाव पैदा करेंगे बच्चे वैसे ही बनते चले जाएंगे। कहावत भी है- जैसा 'बीज डालोगे वैसा ही फल मिलेगा।' यह वाक्य प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए संदेश और प्रेरणादायक है।

बच्चों को ऐसे गुरु का सानिध्य और ऐसी परिस्थितियां दें जिससे और आगे चलकर अपने को सार्थक करें। मनुष्य का सबसे बड़ा आधार है- सद्गुण। धन-वैभव, सम्पत्ति आदि तो दुराचारी व्यक्ति भी प्राप्त कर लेता है, लेकिन वह कभी भी चरित्रवान और प्रतिष्ठा का अधिकारी नहीं बन सकता। दुर्गुणी व्यक्ति कितना भी धनवान और बलवान हो जाय लेकिन चरित्रवान नहीं हो सकता। इसलिए हमें बचपन से ही बच्चों को सदाचार की शिक्षा देना चाहिए। बच्चों के लिए सबसे पहला गुण है- शिष्टता। शिष्टता बच्चों का वह दिव्य अलंकार है जो उनको आकर्षक बना देता है। सबसे विनम्रतापूर्वक बोलने वाले बच्चे सबको प्यारे लगते हैं।

दूसरा गुण है परिश्रम और परोपकार, परिश्रम से बच्चे स्वस्थ रहते है और परिश्रम से ही जीवन में सफलता मिलती है। बच्चों का परोपकार उनकी सेवा-भावना में ही निहित रहता है। सत्यवादिता- बच्चों को शिक्षा दें वह सदैव सत्य बोलें क्योंकि मनुष्य के मुख की शोभा उनके सत्य बोलने से ही होती है। ईमानदारी-ईदानदार व्यक्ति ही उच्च शिखर पर जा सकता है।

यह ऐसा गुण है जिससे मनुष्य की समाज में पूजा होती है। इस प्रकार हमें अपने नैतिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए बच्चों को संस्कारयुक्त बनाना अति आवश्यक है। बचपन की अच्छी आदतें और संस्कारवान शिक्षा मनुष्य को महान बना देती है और बुरी आदतें मनुष्य को गर्त में डाल देतीं हैं। इसलिए

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

हमें अपने और अपनी सन्तान के जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए अच्छे गुणों को धारण करना चाहिए।

यदि बचपन में किसी को चोरी करने की आदत बन जाय तो वह बहुत बड़ा चोर बन जाता है, जीवन में दुःखों का सामना करना पड़ता है और परिवार का नाम भी कलंकित होता है। लेकिन उसका कारण है सिर्फ हमारे बचपन के संस्कार। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमें अपने बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए और उन्हें अच्छे और सच्चे मार्ग अर्थात् वेद मार्ग पर

संतानों को अच्छे संस्कार दें, संस्कार देना भी माता-पिता और आचार्यों, शिक्षकों का कर्त्तव्य है। बच्चों में हम जैसा भाव पैदा करेंगे वैसे बनते चले जाएंगे। कहावत भी है- जैसा 'बीज डालोगे वैसा ही फल मिलेगा।' यह वाक्य प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए संदेश और प्रेरणादायक है। बच्चों को ऐसे गुरु के सानिध्य और ऐसी परिस्थितियां दें जिससे और आगे चलकर अपने को सार्थक करें। मनुष्य का सबसे बड़ा आधार है- सद्गुण। धन-वैभव, सम्पत्ति आदि तो दुराचारी व्यक्ति भी प्राप्त कर लेता है, लेकिन वह कभी चरित्रवान और प्रतिष्ठा का अधिकारी नहीं बन सकता। दुर्गुणी व्यक्ति कितना भी धनवान और बलवान हो जाय लेकिन चरित्रवान नहीं हो सकता। इसलिए हमें बचपन से ही बच्चों को सदाचार की शिक्षा देना चाहिए। बच्चों के लिए सबसे पहला गुण है- शिष्टता। शिष्टता बच्चों का वह दिव्य अलंकार है जो उनको आकर्षक बना देता है।

पुराणं पञ्चलक्षणम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

पुराणानि विश्व-कल्याण-करिण्या: भारतीय संस्कृतेर्मूलस्रोतसां वेदानां भाष्यभूतानि सन्तीति भारतीय-संस्कृते: अनुशीलनार्थ पुराणानां पारायणं परमावश्यकमिति वेदेषु यद्भारतीयाचार-विचाराणां स्वरूपं संक्षेपत उपलभ्यते, तत्पुराणेषु कथेतिहासद्वाराति विस्तृतम् उपलभ्यते। पुराणानां भाषा प्रसादगुणगुम्फिता अतिमञ्जुला भावमयी च विद्यते। 'पुराणं पञ्चलक्षणम' इत्युक्त्वा पञ्चलक्षणलक्षितं पुराणमुच्यते। कानि च पञ्च लक्षणानि?

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

इति पुराण-पञ्च-लक्षणानि प्रोक्तानि। सर्वेषु पुराणेष्वस्य पञ्चलक्षणस्य न्यूनाधिकरूपेण समावेशोऽस्ति। एषां पञ्चानां विषयाणां मध्ये कस्मिंश्चित्पुराणे कस्यचिद् एकस्याधिक्यं वर्तते तु कुत्रचित् कस्यचिद् अपरस्य अधिक्यम्, अन्यत्र च तस्य संक्षेपत्वं वर्तते। पुराणलक्षणानुसारं पुराणेषु सर्ग-प्रतिसर्ग वंशमन्वन्तर-वंशानुचरितानाम् एषां पञ्चानां मुख्यतया वर्णनं विद्यते।

1. तेषु पञ्चविध-पुराण-लक्षणेषु पुन: क: सर्ग: ? इति जिज्ञासायां श्रीमद्भागवते प्रोक्तम्-

अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः।
भूतमात्रेन्द्रियार्थानां सम्भवः सर्ग उच्यते।।

साम्यावस्थापन्नस्य त्रिगुणात्मकस्य प्रधानतत्त्वस्य प्रकृते: गुणक्षोभान्महत्तत्वं ततोऽहङ्कार:, तत एकादशेन्द्रिय पञ्चभूतानां सम्भव: सर्ग उच्यते।

2. यथा वर्षत्तौ पृथिव्याम् अज्ञातरूपेण स्थितानि बीजानि बहुविधलतागुल्म तृणादिरूपेण स्वयं प्रादुर्भवन्ति, तथैव वर्तमानसृष्टे: पूर्वसृष्टौ समुत्पन्नानां जीवानामवशिष्ट वासनामयै: संस्कारै: पुन: सृष्टि-रचना-समयेऽनेके पदार्था: तद्-भोक्तारो जीवाश्च समुत्पद्यन्ते। यथा चोक्तं श्रीमद्भागवते-

पुरुषानुगृहीतानामेतेषां वासनामयः।
विसर्गोऽयं समाहारो बीजाद् बीजं चराचरम्।।

3. ब्रह्मण: हिन्दूजातेरितिहासस्य मूलस्रोतांसि सन्ति। यद्यपि रामायणे महाभारते च प्रधानतयेतिहासस्यैव वर्णनं विद्यते, तथापि पुराणेष्वितिहासस्य विवेचनं सर्वोपकारकमति सुगमतया कृतमस्तीति बहव: समालोचका: सोल्लासं समर्थयन्ति। अतिप्राचीनतमेयं हिन्दुजाति: सृष्टिकालादारभ्य अद्य यावत् स्वस्वरूपं सम्यक् संरक्षयन्ती तथैव तिष्ठति। बहुभिराक्रमणैरपि अस्या मूलं न नष्टम्। यत्रान्यासां जातीनां वंशस्येतिहासो न संतोषजनक:, तत्र हिन्दुजातेरितिहासस्य वर्णनमादिकालादेव व्यवस्थितं मिलति। हिन्दुजातौ सूर्यवंश-चंद्रवंश-वसिष्ठवंश-गौतमवंश-कश्यप वंशादयोऽनेके वंशा: सन्ति। तेषां सुव्यवस्थिता वंश परंपरा पुराणेष्वेवोपलभ्यते।

4. मनो: मनुपुत्राणां देवानामिन्द्रस्य महर्षीणामंशावताराणाञ्च घटनाया उल्लेखो मन्वन्तरमुच्यते। यथाह श्रीमद्भागवते-

मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः।
ऋषयोंऽशावतारश्च हरेः षड्विधमुच्यते।।

यदि मन्वन्तरज्ञानं न स्यात्तर्हि भारतीयानामितिहासे महती अव्यवस्था समुपतिष्ठेत्। स्वयम्भुमनुसमये के ऋषय: ? के च राजान आसन्? स्वारोचिषस्य मनो: के के सहायका आसन्? उत्तमस्य मनो: काले कस्य पुराणस्य प्राधान्यमासीत्? रैवतकमनुकाले कीदृशी व्यवस्था आसीत्? इत्यादिप्रश्नानां यथार्थमुत्तरं पुराणैर्विना को दातुं शक्नुयात्? मन्यन्तरज्ञानमनन्तरा कस्यापि महर्षे: राज्ञो वा कालस्य कथं यथार्थज्ञानं स्यात्? एकस्मिन्कल्पे चतुर्दशमनवो भवन्ति, केन मनुना का स्मृति: रचिता? इत्यादिज्ञानं मन्वतरं विना न भवितुमर्हति।

5. विशिष्टवंशेषु समुत्पन्नानां विशिष्टानां पुरुषाणां चरित्रवर्णनं वंशानुचरितमुच्यते। यथा चोक्तं श्रीमद्भागवे-

वंशानुचरितं तेषां वृत्तं वंशधराश्च ये। अत्र च मृत्युलोक-प्रभवाणां पुण्यकर्मशालिनाम् ऋषीणां धर्मरक्षण-तत्पराणां राज्ञां च वंशजा वर्ण्यन्ते, सृष्टिश्रृङ्खलाया: सदाचारादि-विभागानाञ्च विस्तृतवृत्तान्तमुपलभ्यते। मनुष्याणां समक्षे यदि घोरातिघोरा विपदुपतिष्ठते, तदा महन्तोऽपि धर्मविद: किंकर्त्तव्यविमूढा: भवन्ति, तथा च चेतसि बहुविधा: विचारा उत्पद्यन्ते। एवंविध विषमपरिस्थितौ स्वपूर्वजानां चरित्राणि स्मृत्वा पतनादात्मनो रक्षणाय वंशानुचरितस्य समावेशो वर्तते पुराणेषु। **पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम्** (अष्टादशपुराण परिचय)

OO

महात्मा गांधी

जन्मदिवस : 2 अक्टू. पर शत्-शत् नमन

हमारे देश में 19वीं शती के 7वें शतक में ऐसी एक महान प्रतिभा का उदय हुआ। इस प्रतिभाशाली पुरुष का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 के दिन गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। महात्मा गांधी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत की आजादी के संघर्ष में बिताया। महात्मा गांधी को उनके महान कार्यो और महानता के लिए 'महात्मा' कहा जाता है जो की उन्होंने जीवन भर किया। इस महान कार्य की वजह से पूरे देश में 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी जयंती मनाई जाती है। उनके पिता का नाम करमचंद गांधी था और माता का नाम पुतलीबाई था। इनके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। वह काठियावाड़ की एक छोटी सी रियासत के दीवान अर्थात प्रधानमंत्री थे और उनकी माता को धार्मिक विचारों में रस था। गांधीजी के जीवन में उनकी माता का बहुत प्रभाव रहा। महात्मा गांधी को हमारे देश की आजादी में उच्चतम योगदान की वजह से उन्हें 'राष्ट्रपिता' या 'बापू' के नाम से जाना जाता है। गांधी जी भारत के एक महान और उत्कृष्ट व्यक्तित्व थे जो आज भी देश और विदेशों के लोगों को अपने महानता की विरासत, आदर्शवाद और महान जीवन की वजह से प्रेरित करते है। इन्होंने अहिंसा और लोगों की एकता में विश्वास किया और भारतीय राजनीती में आध्यात्मिकता लायी। उन्होंने भारतीय समाज से छुआछूत को हटाने के लिए, भारत में पिछड़े वर्गों के उत्स्थान के लिए, सामाजिक विकास के लिए, गावों का विकास करने के लिए आवाज उठाई। भारतीय लोगों को स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। कई सामाजिक प्रश्नों के लिए भी उन्होंने कठिन प्रयास किये। उन्होंने आम लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन में सहभाग लेने के लिए सामने लाया और उनकी सच्ची स्वतंत्रता और देशप्रेम के लिए लड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया। उनके जीवन की कहानी हमारे लिए एक महान प्रेरणा है। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था, गांधीजी का भी विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा जी से हुआ था। महात्मा गांधीजी की शिक्षा 18 वर्ष की आयु में ये बैरिस्टरी की पढ़ाई करने के लिए जब इंग्लैंड जाने लगे तो इनके संबंधियों और जाती बिरादरी के लोगों ने इनका बड़ा विरोध किया, लेकिन किसी बात की चिंता किये बिना ये अपनी हठ पर अटल रहे और जलयान से इंग्लैंड के लिए रवाना हो गए और वकीली पेशे की शुरुवात की। उन्होंने जिंदगी में काफी मुसीबतों का सामना किया लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी वे हमेशा आगे बढ़ते रहे।

जन्मदिवस : 2 अक्टू. पर शत्-शत् नमन

लालबहादुर शास्त्री

लालबहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगलसराय के एक सामान्य परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री शारदाप्रसाद श्रीवास्तव एक साधारण अध्यापक थे। वे एक आदर्श शिक्षक होने के साथ-साथ सहृदय एवं उदार चरित्र के व्यक्ति थे, जिनका प्रभाव लालबहादुर पर गहरे रूप से पड़ा था। पिता की आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर अल्पायु में ही उन्हें आर्थिक बोझ का सामना करना पड़ा। मां रामदुलारी ने लालबहादुर में स्वाभिमान की भावना ऐसी कूट-कूटकर भरी थी कि एक बार 12 वर्ष की अवस्था में अपने साथियों के साथ गंगा पार मेला देखने गये लालबहादुर जब लौटने लगे, तो उनके पास पैसे नहीं थे। उन्होंने अपने साथियों को यह बात नहीं बतायी। वे यह कहकर किनारे रुक गये कि वे बाद में आयेंगे। सब मित्रों के चले जाने के बाद उन्होंने गंगा का चौड़ा तट तैरकर पार किया। हाईस्कूल की परीक्षा हरिशचन्द्र स्कूल वाराणसी से पूर्ण की। 1921 में गांधीजी के साथ असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये। काशी विद्यापीठ से बीए की उपाधि प्राप्त करने के बाद अपने नाम के आगे बीए न जोड़कर शास्त्री जोड लिया, ताकि इससे भारतीयता की पहचान हो। इसके बाद अपने साथियों के साथ लाला लाजपतराय की पीपुल्स सोसाइटी में शामिल होकर प्रथम कार्य हरिजन उद्धार का किया। फिर वे लोकसेवक संघ के आजीवन सदस्य बन गये इलाहाबाद में वे कांग्रेस कमेटी के महासचिव तथा 1930-36 तक अध्यक्ष रहे। उनके संगठन व कार्यक्षमता ने उन्हें बड़े-बड़े नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया। 1940 में शासन विरोधी गतिविधियों के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। शास्त्रीजी की कर्तव्यनिष्ठा और योग्यता को देखते हुए 1951 में प्रधानमंत्री नेहरू ने उन्हें कांग्रेस का महासचिव बनाया। भारतीय गणतंत्र के लागू होने के बाद उन्हें रेल तथा परिवहन मंत्री बनाया गया। उन्होंने छोटे-छोटे स्टेशनों का निर्माण करवाया। हजारों मील लम्बी रेल लाइनें बनवायीं। इंजन, मालगाड़ी तथा सवारी गाड़ियों के वर्कशाप बनवाये। तीसरी श्रेणी के यात्रियों को भी सुविधाएं मुहैया करवायीं। 1952 में आरियालूर रेल दुर्घटना को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। 1956-57 में उन्हें संचार एवं परिवहन मन्त्री का कार्य सौंपा गया। इसके बाद वे वाणिज्य और उद्योग विभाग के मंत्री भी बनाये गये। इस पद पर रहते हुए उन्होंने विदेशी व्यापार और लघु उद्योग-धंधों को बढ़ावा दिया।

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

जन्म : 4 अक्टूबर
शत्-शत् नमन

श्यामजी कृष्ण वर्मा एक भारतीय क्रांतिकारी, वकील और पत्रकार थे। वो भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। इंग्लैंड से पढ़ाई कर उन्होंने भारत आकर कुछ समय के लिए वकालत की और फिर कुछ राजघरानों में दीवान के तौर पर कार्य किया पर ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर वो भारत से इंग्लैण्ड चले गये। वह संस्कृत समेत कई और भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। उनके संस्कृत के भाषण से प्रभावित होकर मोनियर विलियम्स ने वर्माजी को ऑक्सफोर्ड में अपना सहायक बनने के लिए निमंत्रण दिया था। उन्होंने 'इंडियन होम रूल सोसाइटी', 'इंडिया हाउस' और 'द इंडियन सोसिओलोजिस्ट' की स्थापना लन्दन में की थी। इन संस्थाओं का उद्देश्य था वहां रह रहे भारतीयों को देश की आजादी के बारे में अवगत कराना और छात्रों के मध्य परस्पर मिलन एवं विविध विचार-विमर्श। श्यामजी ऐसे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें ऑक्सफोर्ड से एम.ए. और बार-एट-ला की उपाधियां मिलीं थीं। श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को गुजरात के माण्डवी कस्बे में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीकृष्ण वर्मा और माता का नाम गोमती बाई था। जब बालक श्यामजी मात्र 11 साल के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया जिसके बाद उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। प्रारंभिक शिक्षा भुज में ग्रहण करने के बाद उन्होंने अपना दाखिला मुंबई के विल्सन हाई स्कूल में करा लिया। मुंबई में रहकर उन्होंने संस्कृत की शिक्षा भी ली। सन् 1875 में उनका विवाह भानुमती से करा दिया गया। महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे, विदेश में रहकर आर्य समाज का प्रचार किया।

निधन : 15 अक्टूबर
शत्-शत् नमन

'मृत्यु रहस्य' : महात्मा नारायण स्वामी

पूज्यपाद म. नारायण स्वामी जी महाराज आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी थे। 'मृत्यु-रहस्य' उनकी एक अनुपम कृति है जो मनुष्य के मस्तिष्क को चिंतन धारा में बहाने के लिए उपयोगी रचना है। यह पुस्तक मानव मन की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने का काम अति सरल ढंग से करती है। 'मृत्यु-रहस्य' जैसे दार्शनिक विषय को सरल-सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। स्वाध्याय प्रेमीजन श्री स्वामी महाराज की इस पुस्तक का रसास्वादन करके जहां आत्म लाभ लेंगे वहीं सन्तप्त आत्माओं को भी शान्ति मिलेगी। आर्य समाज के महान नेता तपस्वी, योगी विद्वान संत गम्भीर लेखक हैदराबाद के निजाम शासक के विरुद्ध सत्याग्रह का संचालन किया।

लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल

जन्म : 31 अक्टूबर
शत्-शत् नमन

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में उनके ननिहाल में हुआ। वे खेड़ा जिले के कारमसद में रहने वाले झावेर भाई पटेल की चौथी संतान थे। उनकी माता का नाम लाडबा पटेल था। उन्होंने प्राइमरी शिक्षा कारमसद में ही प्राप्त की, बचपन से ही उनके परिवार ने उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। 1893 में 16 साल की आयु में ही उनका विवाह झावेरबा के साथ कर दिया गया था। 1897 में 22 साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1900 में जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली। गोधरा में वकालत की प्रेक्टिस शुरू कर दी, जहां इन्होंने प्लेग की महामारी से पीड़ित कोर्ट ऑफिशियल की बहुत सेवा की। क्रिमिनल लॉयर के रूप में नाम कमाया। अपनी वकालत के दौरान उन्होंने कई बार ऐसे केस लड़े जिसे दूसरे निरस और हारा हुए मानते थे। उनकी प्रभावशाली वकालत का ही कमाल था कि उनकी प्रसिद्धी दिनों-दिन बढ़ती चली गई। यहीं उनके पुत्री मणिबेन का 1904 व पुत्र दह्या का 1905 में जन्म हुआ। सरदार पटेल अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी, समर्पण व हिम्मत से साथ पूरा करते थे। भारत की रियासतों को विलय करने में उनकी भूमिका को सदैव याद किया जाता रहेगा। वह भारत के प्रथम गृहमंत्री थे, उन्हें लौह पुरुष के नाम से जाता जाता है।

वास्तव में यज्ञ ही कामधेनु है

प्रो. ओम कुमार
अंतरराष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता

प्रायः प्रत्येक देश की अपनी पौराणिक कथाएं होती है। जितना प्राचीन देश, उतनी ही उसकी परम्पराएं, पौराणिक कथाएं। पौराणिक कथाओं में कुछ ऐसे नाम और संदर्भ आ जाते हैं, जो होते तो हैं काल्पनिक, किंतु पीढ़ी दर पीढ़ी वे चलते रहते हैं, इन्हें अव्यय प्रतीक भी कह सकते हैं और मिथक भी। इसी प्रकार की ऐतिहासिक सी लगने वाली कहानियां या किस्से भी लिजैण्ड रूप में चलते रहते हैं और संबंद्ध देश की परम्पराओं का अभिन्न अंग बन जाते हैं भारत की पौराणिक कथा माला (माइथोलोजी) सबसे समृद्ध और प्राचीन है। इसी प्रकार यूनान की माइथोलोजी भी यूरोप क्या, भारत को छोड़कर अन्य सभी देशों से प्राचीन है, विविधतापूर्ण है, समृद्ध है।

अपनी माइथोलोजी में कुछ प्रसिद्ध मिथक हैं– कल्पवृक्ष/पारिजात, जिसके नीचे बैठकर जो भी कामना की जाती है, वह पूर्ण हो जाती है, ऐसी परम्परागत अनश्रुति है। पारसमणि/पारस पत्थर लोहे से छुआ दो तो लोहा सोना बन जाता है। अक्षयपात्र जो रसोई में हो तो चाहे जितने लोग भोजन कर लें, भोजन कम नहीं पड़ता। कहते हैं बनवास में ऐसा ही अक्षय पात्र द्रौपदी के पास था।

कामधेनु ऐसी गाय जिसको जब चाहे दुह लें, जितना चाहे दुह लें, इसके स्तनों का दुग्धकोष कभी समाप्त नहीं होता, आदि-आदि। ये सब अनुश्रुतियां हैं, इनको देखा किसी ने नहीं, विश्वास सभी करते आये हैं इनमें से मैंने 'कामधेनु' मिथक को चुना है और यज्ञ को कामधेनु कहा है। यूं तो यज्ञ को प्रशस्ति में अनेक कथन हैं यथा– **'अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नभिः'** अथर्व (९-१०-१३) यह समस्त विश्व का नामि बिन्दु अर्थात् आधार है। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'। शतपथ ब्राह्मण 'स्वर्गकामो यजेत' आदि-आदि। किंतु मैंने कामधेनु वाला प्रतीक गाय के इस श्लोक से लिया है–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वाऽस्त्विष्टकामधुक्।। गीता ३/१०

अर्थात् प्रजापति ने प्रजा को यज्ञ के साथ उत्पन्न किया और कहा कि तुम (अर्थात् प्रजा) इसके (यज्ञ) द्वारा शासन करो, इसे खूब बढ़ाओ, यह बढ़ता जायेगा और कामधेनु की तरह से तुम्हारे अभीष्ट की पूर्ति करेगा। यहां कामधेनु का प्रतीक इस बात का द्योतक है कि यज्ञ से हमें बहुत कुछ प्राप्त होता है। यज्ञ के कामधेनु होने का एक छोटा सा संकेत ऋग्वेद के मंडल 6 सूक्त 3 मंत्र 2 में भी किया गया है कि 'ईजे यज्ञेभिः' जो किसी दिखावे अथवा आडम्बर की भावना से नहीं बल्कि यज्ञ की भावना से किया गया यज्ञ ही यज्ञ को और आगे बढ़ाता है, इसको पुष्ट करता है– 'यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्' (यजु. ८८/२९)। क्योंकि यज्ञ को याग भी कहा जाता है और त्याग याग की आत्मा है, बिना त्याग के याग कभी संभव ही नहीं है। 'इदन्न मम' भी भावना से रहित यज्ञ मात्र एक औपचारिकता है, 'इदन्न मम' की भावना से रहित यज्ञ आसुरी कोटि का भौतिक कर्म तो कहा जा सकता है, देव कोटि का आध्यात्मिक पुण्य कार्य (श्रेष्ठतम कर्म) कदापि नहीं कहा जा सकता। यज्ञ रूपी कामधेनु से हमें क्या-क्या प्राप्त हो सकता है इसको हम अथर्ववेद के इस मंत्र से जोड़कर भी देख सकते हैं– 'स्तुता मया वरदा वेदमाता...' (अथर्व १९/७१/१)

'ओ३म्' पिता ने हमें वरदा वेदमाता दी, गायत्री को भी वेदमाता कहा जाता है, वेदत्रयी भी हमारी माता है। वेदाध्ययन से मिलने वाला शुभ लाभ यज्ञ बतलाया गया है जैसा कि महाभारत के एक संदर्भ में कहा गया है– 'अग्निहोत्रफला वेदा' अग्निहोत्र की प्राप्ति अर्थात् यज्ञ की प्राप्ति, जीवन में यज्ञीय दृष्टि और यज्ञीय भावना से कर्म करना, चलना यह सब वेदाध्ययन का फल है और यह यज्ञ वेदमाता द्वारा हमें वरदान प्रदान करने का एक साधन है जिसके माध्यम से वेदमाता हमें आयु, प्रजा, प्राण, पशु, कीर्ति, धन ब्रह्मवर्चसादि से युक्त करती है। और फिर यहां भी 'इदन्न मम' त्याग की भावना का उल्लेख यह कह कर किया है कि उपर्युक्त सिद्धियों अर्थात् प्राप्तियों में लिप्त न होने वाला सच्चे वैराग्य और अनासक्ति भाव वाला व्यक्ति ही मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। जो इनमें लिप्त होकर अर्थात् उलझकर यह जायेगा वह मानो वेदों के फल 'यज्ञ' को समझ ही नहीं पाया, यज्ञीय भावना को अपने जीवन का अंग नहीं बना पाया।

अतः वह वेदमाता के वरदान पाकर भी 'कुछ नहीं पाया' की स्थिति में रह जायेगा। यज्ञकर्ता को यज्ञ रूपी 'कामदा सुरभि गौ' (देवो की गाय) वशिष्ठ मुनि की अभीष्ट दात्री नंदिनी गौ क्या कुछ भौतिक, आध्यात्मिक संपदा (असंख्य वरदान) देती है इसकी एक लम्बी सूची यजुर्वेद के अध्याय 18 के प्रथम 27 मंत्रों में फिर 28वां मंत्र छोड़कर 29वें मंत्र देखने को मिलती है। मंत्रान्त्र में 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' (प्रथम 2 7 तक) पुनः 29वें मंत्र में के अंत में 'यज्ञेन कल्पताम्' शब्द स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं कि यज्ञ हमें विपुल सम्पदा देता है। OO

मृत्यु से अमृत की ओर

कृष्ण औतार

ओउम् असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमयेति। -बृहदा. 1/3/18

हम हटें असत् से सत् पथ पर चढ़ जायें, हे प्रभो अंधेरे से प्रकाश में आयें। जागृत ज्योतिर्मय सजग बनाकर जीवन, कर दूर मृत्यु को अमृत्व को पायें॥

मृत्यु का भय सर्वव्यापक है। प्रत्येक प्राणी मृत्यु से डरता है, परंतु वैदिक हमें निर्भय बनाती है। मृत्यु से लेशमात्र भी डरने की आवश्यकता नहीं है। मृत्यु क्या है? मृत्+यु=मृत्यु। 'य' संस्कृत की एक धातु है। जिसका अर्थ तोड़ना और जोड़ना है। यह तोड़-जोड़ ही मृत्यु है। यह पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण कर लेना ही मृत्यु और जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म निश्चित है। इस संबंध में श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन को निम्न श्लोकों द्वारा जन्म और मृत्यु के स्वरूप को समझाते हैं-

जैसे पुराने त्याग कर, नव वस्त्र बदलें सभी। यों जीर्ण तन को त्याग, नूतन देह धरता जीव भी।। जन्मे हुए मरे, मरे निश्चय जन्म लेते कहीं। ऐसी जो अटल बात है, उसकी उचित चिंता नहीं॥ किसी कवि ने मृत्यु के संबंध में बड़ी सुंदर कविता लिखी है- निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु एक है विश्राम स्थल। जीव यहां से फिर चलता है, धारण कर नव जीवन सम्बल॥

मृत्यु एक सरिता है, जिसमें श्रम से कातर जीव नहाकर। फिर नूतन धारण करता है, कायारूपी वस्त्र बहाकर॥

इन्हीं भावों को लेकर उर्दू के एक कवि ने निम्न पंक्तियों में अपने उद्गार प्रकट किये हैं- मौत ज़िंदी का वक़्फ़ा (इंटरवैल) है। या यूं कहो आगे बढ़ेंगे कुछ दम (विश्राम) लेकर॥

जो मनुष्य मृत्यु के रहस्य को समझ लेता है, उसका मृत्यु-भय समाप्त हो जाता है, तथा उसके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। ऐसा व्यक्ति संसार में अनासक्त भाव से रहते हुए, अपने कर्त्तव्य कर्मों को निष्काम भाव से करते हुए हंसते हुए इस संसार से विदा होता है, तथा कर्मानुसार अन्य श्रेष्ठ परिवार मों पुनर्जन्म पो प्राप्त होता है

पुनर्जन्म के संबंध मे योगीराज श्रीकृष्ण बड़े दृढ़ शब्दों में अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं-

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपा:। न चैव व भविष्याम: सर्वे वयमत: परम्॥ गीता-2/12

ऐसा कभी नहीं था जब मैं नहीं था, ऐसा भी कभी नहीं था जब तू नहीं था। ऐसा भी कभी नहीं था जब युद्ध के लिए सामने खड़े हुए ये राजा-महाराजा नहीं थे। ऐसा कभी नहीं होगा, जब तू मैं, या ये नहीं रहेंगे।

गीता में कितने सुंदर शब्दों में जीवन यात्रा का वर्णन किया है। इस यात्रा में पड़ाव के बाद पड़ाव आते चले जाते हैं, जिसने जिस पड़ाव या स्टेशन तक जाना है, वहां पहुंचकर वह उतर जाता है, मर नहीं जाता, थोड़ा आराम करके अगले पड़ाव के लिए चल देता है। इस यात्रा में जो सहयात्री (सगे संबंधी) होते हैं उनके साथ उतने समय का ही नाता रहता है, जब तक यात्रा चलती है। उसके बाद नई यात्रा में उसे नये संगी-साथी मिल जाते हैं, पुराने भूल जाते हैं। यही जीवन तथा मृत्यु की कहानी है, अंत तक जीवन ही जीवन है। शरीर के रूपांतरण को 'मृत्यु' तथा आत्मा के रूपांतरण को 'पुनर्जन्म' कहते हैं।

शरीर को बचपन, जवानी व वृद्धावस्था में आत्मा सदा एक रूप बना रहता है। इस प्रकार जो मनुष्य मृत्यु के रहस्य को समझ लेता है, उसका मृत्यु-भय समाप्त हो जाता है, तथा उसके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। ऐसा व्यक्ति संसार में अनासक्त भाव से रहते हुए, अपने कर्त्तव्य कर्मों को निष्काम भाव से करते हुए हंसते हुए इस संसार से विदा होता है, तथा कर्मानुसार अन्य श्रेष्ठ परिवार मों पुनर्जन्म पो प्राप्त होता है। उसके विदा होने पर अवशिष्ट परिवार-जनों को जो दु:ख होता है, उसका कारण महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है-

'जगत् में प्राणियों के वियुक्त होने पर जो दु:ख अवशिष्ट परिवार को हुआ करता है, उस हेतु यह नहीं होता कि वियुक्त प्राणी उन्हें बहुत प्रिय था, बल्कि असली कारण यह होता है कि वियुक्त प्राणी के साथ अवशिष्ट परिवार के स्वार्थ जुड़े थे और वियोग स्वार्थ-सिद्धि में बाधक होता है। बस असली दु:ख इतना ही होता है कि स्वार्थ हानि हुई।' अपने किसी प्रियजन के वियोग के अवसर पर वेदमाता गये हुओं का शोक न करके अवशिष्ट परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्यों के पालन करने का उपदेश देती हैं। OO

"किसी भी रूप में प्रार्थना प्रभावी है क्योंकि यह एक क्रिया है। इसलिए, इसका परिणाम होगा, यह इस ब्रह्मांड का नियम है जिसमें हम खुद को पाते हैं।"
- स्वामी परमहंस योगानंद

Arya Samaj Movement and its contributions

Article By Dr. Ravi Srivastava- Priest, Arya Samaj

Before we discuss the Arya Samaj and its contributions, we should ask a question "What compelled Maharishi Swami Dayanand to establish the Arya Samaj"? He saw the degraded and debased condition of the Hindus. His heart bled at the sight of millions of people, weak, disjointed, deranged and almost chaotic, helpless and hopeless, ignorant. Deluded, servile and dominated by few proud, parasitical, living in luxury. He wanted to unite the Hindus into one united people to cast off the artificial and self-imposed bonds that tied them to their present position. He wanted them to remove from their eyes the bandage that prevented them from seeing the light of Truth and Liberty. He wanted the society to arise pure and strong from the prevailing welter and corruption, ignorance and internal strife and stand on its own feet and take the proper place among the nations of the world.

With the above goals in mind, Maharishi Swami Dayanand established the Arya Samaj on April 10, 1875 (Saturday, Chaitra Shukla 5, S.1932) in Dr Manik's garden near the Prathna Samaj Hall in Girgaun Road at 5:30 P.M..The Arya samaj was based entirely on the authority of the Vedas conditioned by Rationalism and Utilitarianism. The sixth Principle of the Arya samaj illustrates the main goal of the samaj. It states "The Prime object of the Samaj is to do good to the world, i.e to ameliorate physical, spiritual and social standards of all persons." Some of the contributions are enumerated below. Religious Field: Polytheism, Idolatry, Iconolatry, Animal sacrifice to please GOD, Avatars and Incarnation of GOD, Ancestor worship, Pilgrimages, Pantheism and Priestcraft. Untouchability, Caste System, Child marriage, Polygamy, Widow Marriages, Sati, Purdah, cow protection and Women Education and Equality. I shall focus on the major contributions by the Samaj in the Social field.

Untouchability: Swamiji was deeply perturbed by the attitudes of Orthodox Brahmins towards the depressed class of the Hindus, known as Dalits, Outcaste or Untouchables. They were not allowed to enter Hindu temples, homes and Brahman rituals. They were prohibited to fetch water from the village wells. Their children were not allowed to study in the village school with other children.Swamji was first to declare equal rights for lower caste, the right for education, right for reciting Ved mantras, right for interdinning, right for marriage and right to fetch water from common wells. Swami Shraddhanand spent his whole life for the upliftment of the lower class. This cause was taken up by Mahatma Gandhi and the Congress Party during freedom movement. Thanks to Swamji that in 1950, The Indian Constitution adopted to provide equal social, religious and Cultural rights to the Dalits or Harijans. For the last 30 years Swami Agnivesh has been fighting an uncompromising fight against untouchability.

Caste System: The Sanskrit word for the caste is Varna or Jati or Jat which means a group of people having a specific social rank. It also means " colour". Some authors believe that the Aryan (being fair in complexion) wanted to maintain their distinction from Dravidians (dark complexion) and used the colour to segregate them. According to Dr Karve, Varna is used in Vedas to denote class or category rather than colour. The Varna system allows us to see how a system can survive for several million years. With the evolution of society, in order to maintain law and order and to govern effectively, it became essential to classify people not only in terms of their different qualities but also with respect to their different privileges. OO

YOUR LIFE IS AN OPPORTUNITY TO MAKE YOUR LIFE MEANINGFUL HOW TO MAKE YOUR LIFE MEANINGFUL

जमील अहमद
महानिदेशक, सर्वोत्तम स्कूल, नोएडा

रेखाओं का खेल है, मुकद्दर-रेखाओं से मात खा रहे हो। दर हकीकत अनपढ़ लोगों के लिए Adverse Circumstances में बेचैनी से बचने का ये इकलौता Formula था, जो Relevent नहीं है। Future को शानदार बनाने के लिए Present को दमदार बनाना होा। Effective Present & Bright Future के लिए जीवन में बदलाव जरूरी है। बदलाव Means जीवन शैली का सुंदरीकरण करना होगा। सोच का शुद्धीकरण करना होगा। विचारों में पवित्रता लानी होगी। अर्थात् जीने का अंदाज बदलना होगा, नजरिया बदलना होगा- सोच और विचारों में गुणवत्ता लानी होगी। We have to refine our ideas, हम प्रकृति से प्राप्त दिव्य शक्ति का उपयोग तीन प्रकार से कर सकते हैं। **1.** उपयोग करके **2.** सदउपयोग करके **3.** दुरुपयोग करके ये सब हमारी समझदारी पर निर्भर करता है। देखना यह है कि हमारी संगत की प्रेरणा हमें किस तरफ से लाती है? उपयोगी जीवन जीने से तत्पर्य है, प्रकृति से प्राप्त Innocence and Goodness का उपयोग- Nothing Doing Against Universal Law of Nature सद्उपयोग करने से तात्पर्य है- To Serve The Humanity.

प्राकृतिक रूप में परवरदिगार ने हमें इस Planet पर Goodness and Innocence के साथ भेजा है। We must maintain these two important qualities for ever. यानी Thoughts, Words & Action में Interaction होता रहना चाहिए। This world i.e. this planet is the best place to live that is why we are born in it. Nature ने तो हमें किस्मतवाला-शक्तिमान और संस्कारों की सम्पन्नता के साथ पैदा किया है। हमारा मिजाज Social बनाया है। ये हम है जो बड़े होते-होते अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं। Individual के रूप में हमें विवेकवान बनाया है। सोच और विचार की शक्ति से सुसज्जित किया है। We know very well that Human being is a Social Animal. Hence Society Building के लिए और Society में रहने के लिए संस्कार उत्पन्न करने के लिए हमारे ही द्वारा Religions की उत्पत्ति की गई। Obviously Religious were meant for serving the humanity. हमारी Discretion & Thinking Procss यदि Effective हो जाये और इसका दुरुपयोग न होने दिया जाये तो यकीन मानिए हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

आज दढ़ इच्छाशक्ति के साथ हम संकल्प लेते है : **1.** अपने कर्म और सोच की Quality में निष्ठा के साथ निरंतर सुधार करते रहेंगे। **2.** Society Building में भागीदारी के लिए हर जगह Assets and Necessity के रूप में रहेंगे। किसी के लिए Liability नहीं बनेंगे। **3.** Nation Building में भागीदारी के लिए भारत के Constitution का आदर करते रहेंगे और कभी भूलकर भी Constitution के Provisions के उल्लंघन में कोई काम नहीं करेंगे, यहां तक कि अपे Constitution की भावना के विपरीत भी कोई कार्य नहीं करेंगे। **4.** अपना दायित्व निष्ठापूर्वक निभाएंगे। **5.** शान्ति, सौहार्द और सद्भावना बनी रहे इसके लिए जो बन पड़ेगा करते रहेंगे। **6.** मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए अपने ज्ञान का सद्उपयोग करते रहेंगे। **7.** नैतिक रूप से अपने समाज की महत्वपूर्ण इकाई बनकर अपनी Society को Civilised Society निर्माण में भागीदारी निभाते रहेंगे। Education जब तक मानव मूल्यों का अनुभव नहीं कराती तब तक Education केवल अजीविका उपलब्ध कराने तक सीमित होकर रह जाती है। परिणामस्वरूप सोच में बदलाव उत्पन्न नहीं हो पाता और मानव पशुओं जैसे व्यवहार करता है-

पैर की मोच और छोटी सोच, हमें आगे बढ़ने नहीं देती। टूटी कलम और औरों से जलन, खुद का भाग्य लिखने नहीं देती॥

काम का आलस और पैसों का लालच, हमें महान बनने हीं देता। अपना मजहब ऊंचा और गैरों का ओछा, ये सोच हमें इंसान बनने नहीं देती॥

Start talking to yourself and observing the Interation Between your Thoughts; Words & Actions. Try to Convert them from Impurity to purity. हमें परवरदिगा ने समझदार बनाया है, अपनी समझ की शक्ति के बल पर हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपना Conversion निम्न प्रकार करेंगे। 1. Conversion from Misery to Hapiness. 2. Conversion from Violence to Harmony. 3. Conversion from Cruelity to Compassion. 4. Conversion from Fighting to Brother Hood etc. 5. Conversion from Ignorance to knowledge/Wisdom. बैर, घृणा, द्वेष, क्रोध, जलन, चिंता, लालच और अहंकार जैसी निगेटविटी से हमेशा-हमेशा के लिए दूरी बनाएंगे।

मन और व्यक्तित्व का विकास

महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

मेरा यह विश्वास है कि परमात्मा ने वेद ज्ञान सृष्टि के आदि काल में हम मनुष्यों के लिए ही दिया जिसमें हम अपना समुचित विकास कर सकें। यह ज्ञान सार्वभौमिक है और सार्वकालिक भी। वेद सचमुच सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, आवश्यकता इस बात की है कि हम वेद में समाहित अनेकानेक सत्य विद्याओं को समझें और उनको ग्रहण करें। मन और व्यक्तित्व का विकास में, मेरी समझ में तीन बातें महत्वपूर्ण हैं-1.व्यक्ति 2.व्यक्तित्व और 3.व्यक्तित्व के विकास में मन की भूमिका।

हम सब देहधारी मनुष्य इस धरा पर व्यष्टि रूप में व्यक्ति हैं और समष्टि रूप में परिवार, समाज राष्ट्र और विश्व का एक अंग। व्यक्ति के रूप में जब हम अपने आप पर दृष्टिपात करते हैं तो हम शरीर 'मन' और 'आत्मा' इन तीनों से संगठित पाते हैं। इनकी सत्ता और सुयज्यता से ही हमारा जीवन है।

सम्पूर्ण वेद, जैसा कि मैं समझता हूं या तो प्रत्येक व्यक्ति के निश्रेयस: और अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त करते हैं या उसको परिवार, समाज राष्ट्र और विश्व के प्रति उसके कर्त्तव्यों और दायित्वों को बोध कराते हैं जिनमें श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का विनाश भी सन्निहित है और जिन मंत्रों में ईश्वर की महिमा व गुणों का वर्णन है या पृथ्वी पर्यंत पदार्थों का ज्ञान है, वहां भी लक्ष्य मानव मात्र का अभ्युदय तथा कल्याण ही है।

व्यक्ति के साथ ही व्यक्त्वि जुड़ा हुआ है। परंतु व्यक्तित्व का आकलन केवल इतने से नहीं किया जा सकता कि व्यक्ति कैसे दिखता है। वस्तुत: व्यक्तित्व का वह पहलू है, जो समाज में उसकी पहचान बनाता है। व्यक्तित्व में व्यक्ति के विचार, उसका व्यवहार, उसकी कार्य शैली, उसका जीवन शैली, उसकी संप्रेषणकला, उसका जीवन दर्शन, उसका कार्य, उसका आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण सभी कुछ आ जाता है।

व्यक्तित्व स्थिर व गतिहीन नहीं होता। व्यक्तित्व का निर्माण और विकास व्यक्ति की अपनी अवधारणा एवं समग्र सीखों के अनुसार होता है। अपने वेदाध्ययन के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि समूचे विश्व साहित्य में वेदों के अतिरिक्त ऐसी कोई प्राचीनतम पुस्तक नहीं है जो बिना किसी भेदभाव के व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का सही निर्माण एव विकास करने में सहायक हो सके। सम्पूर्ण वेद में व्यक्ति का सर्वातिशय महत्व है। व्यक्ति-व्यक्ति से परिवार बनता है। परिवार-परिवार से समाज का निर्माण होता है समाज-समाज के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र-राष्ट्र के व्यक्तित्व का निर्माण सब निर्माणों का मूलाधार है। वेद में एक प्यारा शब्द है 'वाज'। प्रसंग के अनुसार वाज के अर्थ होते हैं- अन्न, ज्ञान, शक्ति, ज्योति आदि। व्यक्तित्व के निर्माण के लिए संघर्ष-शील व्यक्ति को वेद में वाजी या वाजिन कहा गया है। यजुर्वेद का नौंवा अध्याय एक प्रकार से 'वाज योग' का मार्ग प्रशस्त करता है। यजु. 9/1 में आया 'वाचस्पर्ति वाजं न: स्वदतु' अर्थात् वाचस्पति (वेदवाणी का मर्मज्ञ विद्वान आचार्य) हमारे व्यक्तित्व को स्वादयुक्त करे, सजाये, संवारे यजु.9/16 में अनुसार वाजसास्तेतायं वाज्सेत् अर्थात् व्यक्तित्व निर्माण हेतु संमग्र सेवी (मानव) वाज का सेतु पुल बनाये। देखा जाय तो व्यक्ति की शारीरिक 'आत्मिक' और सामाजिक उन्नति में समुचित सेतु बंधन ही उसके व्यक्तित्व का सही विकास ही संसार में सबसे बड़ा उपकार है अथर्ववेद में कांड 3 सूक्त 20 मं. 8 में आया 'वाजस्य नु प्रसवे सं वभूविम' वाज के प्रसवन के लिए ही अस्तित्व में आये हैं। मैं इसको यूं कहूंगा कि व्यक्ति का अस्तित्व ही व्यक्तित्व के विकास के लिए है।

अब थोड़ा विचार करें व्यक्तित्व के विकास में मन की भूमिका पर, विशेषत: वेदों के संदर्भ में। मैंने अभी 'व्यक्ति' के विषय में 'शरीर' मन आर आत्मा की बात की थी। हम सब अपने-अपने शरीर से न्यूनाधिक वाकिफ हैं। हम यह भी जानते हैं कि शरीर और आत्मा के संयोग का नाम है जीवन। आत्मा के शरीर से निकल जाने के पश्चात शरीर शरीर नहीं रहता, शव हो जाता है। जीवित अवस्था में शरीर और आत्मा के मध्य में जो महत्वपूर्ण तत्व है, वह है 'मन' शरीर और आत्मा दोनों को प्रभावित करता भी है और होता भी है।

'मन' क्या है? मन के विषय में जितना विवेचना वैदिक वाङ्मय में मिलता है, उतना कहीं नहीं। आंग्ल भाषा में मन और मस्तिष्क के लिए एक ही शब्द है Mind! इसका बहुत प्रकार से प्रयोग होता है जैसे 'Mind is man. Mind your business. Never mind. I have a question is my mind. I am in two minds' पर वैदिक वाङ्मय में मन एक ही है, जो अंत:करण चतुष्टय का एक अंग है। मानव जीवन के दो करण हैं एक बहि:करण और दूसरा अंत:करण। बहि:करण में पांच ज्ञानेंद्रियां और पांच कर्मेद्रिया सर्वज्ञात है। अंत:करण में बुद्धि और मेधा, मन और चित्त सम्मिलित हैं। आत्मा, जो अपने निज स्वरूप में शुद्ध चैतन्य है, न इसको काटा जा सकता है न मारा जा सकता वह प्रकृतिजन्य प्राण संचालित इस मानव शरीर में आत्म विकास हेतु ईश्वर की व्यवस्था से अवस्थित होती है तो उसकी संज्ञा जीव या जीवात्मा होती है। OO

छोड़ूं मैं किसे भगवन!

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ूं मैं किसे भगवन, दोनों ही तुम्हारे हैं।।

सुख-दुःख ही तो जीवन की गाड़ी को चलाते हैं।
सुख-दुःख ही तो हम सबको इन्सान बनाते हैं।
संसार की नदिया के दोनों ही किनारे हैं।।

दुःख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुःख में सब रोते हैं, सुख में सब हंसते हैं।
सुख मिले पीछे उसके सुख ही तो सहारे हैं।।

सुख में तेरा शुक्र करूं, दुःख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुमको याद करूं।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे हैं।।

जो है तेरी रजा उसमें, देखूं मैं पकड़ कैसे।
मैं कैसे कहूं मेरे, कर्मों के हैं फल कैसे।
चख करके न देखूगा, मीठे हैं कि खारे हैं।।

➲ नंद किशोर आर्य

जमाने को सच्चा सखा मिल गया

जमाने को सच्चा सखा मिल गया।
दयानन्द सा देवता मिल गया।।

ये नैया वतन की भंवर में पड़ी।
खड़ी सामने थी मुसीबत बड़ी।
अचानक इसे ना खुदा मिल गया।।

तरफदार कन्याओं अबलाओं का।
हितैषी अनाथों का विधवावों का।
हमें राह में रहनुमा मिल गया।।

परेशानियों मन्दे हालों के बाद।
बिछुड़ा पड़ा बहुत सालों के बाद।
कि बच्चों को उनका पिता मिल गया।।

धर्म देश जाति की भक्ति मिली।
नई जिन्दगी नई शक्ति मिली।
'पथिक' क्या कहे क्या से क्या मिल गया।।

➲ रचना : सत्यपाल जी 'पथिक'

ऋषि दयानन्द महिमा

ऋषि दयानन्द स्वामी जग में सब महापुरुषों से न्यारे थे
वे तो मानवधर्म के रक्षक थे, वसुधैव कुटुम्ब विचारे थे।

सम्पूर्ण देश में धूमधाम, नगरी मथुरा में पधारे थे
जहां प्रजाचक्षु व्याकरण सूर्य श्री विरजानन्द गुरु धारे थे।

विद्याध्ययन में सर्वोत्तम थे, गुरु के शिष्य वे प्यारे थे
'गुरुदक्षिणा' में जीवन अर्पण कर, गुरु आज्ञा शिरोधारे थे।

सत्य अहिन्सा के प्रचार में, न्याय रूप उजियारे थे
परमेश्वर ने जो वेद श्रुति दी, उस पर गए बलिहारे थे।

ब्रह्मचारी योगी अखण्ड थे, नहीं किसी से हारे थे
ईंटें और पत्थर खाकर भी, पाखण्ड खण्डन ना विसारे थे।

संस्कृत में थे सूर्य समान वे, हिन्दी प्रचार मतवारे थे
वेदों के भाषा भाष्य सृजन से चमत्कार कर डारे थे।

नारी उत्थान, चरित्र निर्माण, जीवन शिक्षा से संवारे थे
सती प्रथा व बाल विवाह जैसी सब कुरीतियां मेटन हारे थे।

'आर्यसमाज' की पौध रोपकर, अज्ञान तिमिर को मारे थे
'आजादी' की बलिवेदी पर, कितनों ने ही प्राण निसारे थे।

छुआछूत को दूर भगा, जाति एक मनुष्य उच्चारे थे
वे तो क्षमा-दया के सागर थे कातिल के भी रखवारे थे।

मन से, वचनों से और कर्मों से सदा रहे इकसारे थे
तुम धन्य-धन्य हो दयानन्द, जिन लाखों जीवन तारे थे

➲ विनोद प्रकाश गुप्त

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 15 तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रधान संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।

3. लेख संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।

5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिंगमिति।। (न्याय सूत्र)

प्राणापान निमेषोन्मेष जीवन मनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानि।। (वैशेषिक दर्शन सूत्र)

दर्शन के उपर्युक्त दोनों सूत्रों में पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा, दुःखादि की अनिच्छा, वैर, पुरुषार्थ, बल, आनन्द, विलाप, अप्रसन्नता, विवेक, पहिचानना ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में प्राणवायु को बाहर निकालना प्राण को बाहर से भीतर को लेना, आंख को मींचना, आंख को खोलना, प्राण का धारण करना, निश्चय-स्मरण-अहंकार करना, पैरों से चलना, सब इन्द्रियों को चलाना, भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह आत्मा स्थूल नहीं है। आत्मा स्थूल न होने के कारण हमें दिखाई नहीं देता। जब आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है। वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुणों के द्वारा होता है। जीवात्मा चेतन अल्पज्ञ सूक्ष्म व एकदेशी नित्य सत्ता है। मानव व पशु आदि के शरीर इनकी आत्माओं के सुख व दुख भोग करने व कर्म करने के साधन हैं। शरीर से हम अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के कर्म कर सकते हैं व करते हैं। बुरे कर्मों को छोड़ कर शुभ वेदविहित कर्म करना ही मनुष्य धर्म है। पंच महायज्ञ कर्मों को करके ही हम मनुष्य कहाते हैं अन्यथा आकृति से मनुष्य होकर भी हम मनुष्य कहाने के योग्य नहीं होते। स्वमन्त व्यामन्तव्य प्रकाश में ऋषि दयानन्द की दी हुई मनुष्य की परिभाषा पर भी ध्यान देना चाहिये और उसके अनुरुप मनुष्य बनने का प्रयत्न करना चाहिये। ...**ओ३म्**

OO

वेद और श्राद्ध तर्पण

मृदुला अग्रवाल

हमारे दैनिक नित्य कर्मों में पंच महायज्ञ संपादित करने का आवश्यक विधान है। इन्हीं में पितृयज्ञ-श्राद्ध-तर्पण का भी विधान है। संयोगवश 'पितर' शब्द से कुछ लोगों ने मृतक पितर मान लिए हैं। अत: उन्होंने उन्हीं मृतकों के संतोषार्थ ही श्राद्ध-तर्पण करने का भी विधान बना लिया है, लेकिन अपने वेदादि आर्ष ग्रंथों में इसका कहीं विधान नहीं है। वेद में लिखा है 'वायुरनिलममृतमथेदं, भस्मांतं शरीरम्॥ (यजु. 40/15) पितर: ऋतव: पितर: अर्थात ऋतु पिता है (कौ. 517) अग्नि में शरीर को भस्मीभूत करने के पश्चात उसके संबंधियों के लिए जीवन के प्रति और कोई कर्तव्य शेष नहीं रह जाता। इस विवेचन के लिए सर्वप्रथम पितर शब्द का विश्लेषण आवश्यक है।

पितरौ- माता च पिता च पितरौ। (अष्टा. 1/2/70), पितर: पिता पाता पालयिता वा। (निरुक्त-4/21), पितरौ- द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बंधुर्मे माता पृथ्वी महीयम् (ऋग्वेद- 1/164/33), पितर: स्वदुषंसद: पितरो व योधा: कृच्छ्रेश्रित: शक्तिवन्तो गभीरा:। चित्रसेना इषुबला अमृध्रा: सतोवीरा उरवो व्रात साहा:। (ऋग्वेद 6/75/9)। यहां सैनिक के लिए पितर शब्द व्यवहृत है। पितर: अरूरुचदुषस: पृश्निरग्रिय उक्षा/बिभर्ति भुवनानि वाजयु:। मायाविन ममिरे अस्य मायया नृधक्षास: पितरो गर्भसा दधु:। (ऋ.09/83/3)- यहां पितर शब्द सूर्य-रश्मियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वसून् वदन्ति तु पितृन् रुद्रांश्चैव पितामहान्। प्रपितामहांस्थादित्या द्यु तिरेषा सनातनी॥ (मनु. 3/285) यहां पितर शब्द अपने माता, पिता, पितामह आदि के अर्थ में व्यवहृत है। पितृलोक: तृतीये वा इतो लोके पितर: (तै.1/3/10/5)। यहां द्यु लोक के लिए पितर शब्द प्रयुक्त है। पितृलोक- पितृलोक सोम: (कौ. 16/5)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट हो गया है कि पितर शब्द का अर्थ मृत माता, पिता, पितामह आदि नहीं है। मृत्यु के पश्चात जीव की गति के बारे में वेद कहता है- 'अपेत वीत वि च सर्पतातोस्मा एत पितरो लोक मक्रन। अहोभिरभ्दिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै॥ (ऋ. 10/14/9)

(मृत्यु के पश्चात जीव सूर्य की रश्मियों को प्राप्त होकर पुन: किरणों के द्वारा अंतरिक्ष, द्यु लोक में भ्रमण करके कालांतर के पश्चात पुन: उषा एवं रात्रियों में विराम करे पुन: जन्म धारण करता है)। 'उरूणसावसुतृपा उदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनां अनु। तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दातामसुचेह भद्रम्॥ (ऋ. 10/14/12) (दिवा रात्रि, आयुरूप जीवन काल के दूत बनकर बार-बार सूर्य का दर्शन कराते हुए जीव को अंतिम काल तक के ले जाकर पुन: जन्म धारण कराते हैं)। प्रश्नोपनिषद् में पिप्पलाद मुनि से कात्यायन के द्वारा प्रश्न किए जाने पर दिव्य तत्वों को भी पितर संज्ञा दी गई है। प्रथम पितर: सूर्य-चंद्रमा (उष्णता एवं तरलता का सम्मिश्रण)।

द्वितीय पितर: संवत्सर-उत्तरायण एवं दक्षिणायन। तृतीय पितर: शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष। चतुर्थ पितर: दिवा रात्रि। पंचम पितर: रज एवं वीर्य। माता च पिता च पितरौ। प्रजापति का आध्यात्मिक तत्व प्राण है और शारीरिक तत्व रयि है। सर्वप्रथम प्रजापति ने प्राण एवं रयि का एक जोड़ा उत्पन्न किया। इसी जोड़े के द्वारा संसार की उत्पत्ति संभव हुई। सर्वप्रथम पितर सूर्य जगत् का प्राण है,

उसकी किरणें प्राणरक्षक हैं, निरोगता प्रदान करने वालीं हैं, एवं अग्नि स्वरूप होकर पाचन क्रिया का नियंत्रण कर प्राणों की सहायता करती हैं।

चंद्रमा विकसित होकर रात्रि प्रदान करता है। इस प्रकार सूर्य और चंद्रमा का जोड़ा उत्पत्ति और विनाश का कार्य करता है। द्वितीय पितर संवत्सर का जन्म भी सूर्य-चंद्रमा की परिक्रमा में तिथि रूप मे होता है। यहां उत्तरीय पथ नर एवं दक्षिण पथ नारी रूप है। इसी के अंतर्गत जीव जन्म और मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। वेद विहित कार्य करने वाले जीव संवत्सर- द्वारा उत्तरायण मार्ग से होकर मुक्ति की ओर एवं सकाम कर्म करने वाले दक्षिणायन-मार्गी जीव शारीरिक भोगों को प्राप्त होकर पुन: आवागमन को प्राप्त होते रहते हैं। तीसरे पितर शुक्ल व कृष्ण पक्ष हैं एवं चौथे पितर दिन एवं रात्रि हैं। इन्हीं में जीव सारे कार्य संपादित करते हैं एवं चौथे पितर दिन एवं रात्रि हैं। इन्हीं में जीव सारे कार्य संपादित करते हैं और पुन: उत्पन्न होते हैं।

पंचम पितर रज एवं वीर्य है, जिसमें जीव पुन: जन्म ग्रहण करता है। यहां रज एवं वीर्य भी पितर हैं। भौतिक पितरों को वेद ने तीन भागों में विक्त किया है- **त्रयो वै पितर: सोमवन्त: बर्हिषद: अग्निष्वात्ता:। सोमवताम् बर्हिषदाम् अग्निष्वात्ताम्॥ (शतपथ. 5/5//4/28) सोमवान्- तद्ये सोमेनेजाना: ते पितर: सोमवंत:। (सोम से यज्ञ संपादन करने वाले)। बर्हिषद- अथ ये दत्तेन पक्वेन लोके जयन्ति ते पितरो बर्हिषद:। (पाक यज्ञ करने वाले)।** ○○

समाचार - सूचनाएं

- आर्ष गुरुकुल नोएडा में सरदार भगत सिंह जयंती पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी ब्रह्मचारियों को सरदार भगत सिंह के बारे में बताया। इस अवसर पर समस्त शिक्षकगण एवं पदाधिकारियों और ब्रह्मचारियों ने भाग लिया।
- 29 सितम्बर को विश्व हृदय दिवस के अवसर पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें गुरुकुल के आचार्यगण एवं ब्रह्मचारियों और गौतमबुद्धनगर के चिकित्साधिकारी व कर्मचारियों ने भाग लिया।
- अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 25 से 28 अक्टूबर रोहणी दिल्ली स्वर्ण जयंती पार्क में मनाया जाएगा। महासम्मेलन चारों दिन आयोजित होने वो विषय अनुसार महत्वपूर्ण विवरण- 25 अक्टूबर उद्घाटन सम्मेलन, वेद सम्मेलन, अंधविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्यवीर सम्मेलन, भजन एवं गीत संध्या। 26 अक्टूबर को निरंतर क्रियाशील आर्यसमाज, संस्कृति एवं सामाजिक संचेतना सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, लेजर शो, भजन प्रस्तुति, मानव कल्याण एवं विश्व शांति एकता यज्ञ (एकरूपीय यज्ञ- प्रशिक्षित याज्ञिकों द्वारा-मुख्य पंडाल में सीधा प्रसारण) महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्मेलन, कवि सम्मेलन। 27 अक्टूबर- राष्ट्र चिंतन सम्मेलन, विश्व आर्यसमाज सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन, आर्यसमा सेवा कार्य सम्मेलन, भजन संध्या। 28 अक्टूबर- संकल्प सत्र, आर्य सांगठनिक सम्मेलन, समापन सत्र।
- आर्यजगत की महान विभूति, प्रसिद्ध दानवीर, राष्ट्र के सजग प्रहरी ठा. विक्रम सिंह जी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। आर्य समाज के अनेक संन्यासियों, विद्वानों, आचार्यों एवं उपदेशकों को सम्मानित किया गया। आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासियों तथा विद्वानों ने उनके यशस्वी जीवन उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु होने की शुभकामनाएं दी।
- आर्यसमाज बी-69, सेक्टर-33 नोएडा, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम का भव्य वार्षिकोत्सव 5 से 9 दिसम्बर 2018 को मनाया जाएगा। पूर्ण विवरण आगामी अंक में दिया जाएगा।
- महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन : आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष 2019 में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकार में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 3, 4, 5 मार्च 2019 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथिया अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाएं। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। व्यवस्था करने हेतु अपने आने से पूर्व लिखित सूचना अवश्य देवें कि कितने ऋषिभक्त आ रहे हैं, संख्या सहित सूचित करें। - रामनाथ सहगल मंत्री
- पूर्व कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र सूद की माताजी श्रीमती कान्ता सूद का स्वर्गवास हो गया वह आर्य समाज ग्रेटर कैलाश से जुड़ीं थीं। उनकी श्रद्धांजलि सभा में रविन्द्र सेठ जी, कठपालिया जी, गुलाटी जी, गायत्री मीना जी आदि उपस्थित रहे।
- डॉ. मनमोहन पाहवा जी के सुपुत्र का स्वर्गवास हो गया। उनकी समृति में आर्य समाज नोएडा में श्रद्धांजलि सभा में सदस्यों द्वारा विनम्र श्रद्धांजलि दी गयी।

- **डॉ. सुंदरलाल कथूरिया का देहावसान :** भावनगर विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार वैदिक विद्वान डॉ. सुंदरलाल कथूरिया जी का 14 सितम्बर को देर रात अचानक हृदयाघात के कारण देहावसान हो गया। वे 78 वर्ष के थे। उनके शोक संतप्त परिवार में पुत्र वरुण कथूरिया, दो पुत्रियां शामिल हैं। स्वर्गीय सुंदरलाल जी अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री, साहित्य पारिजात के संस्थापक संपादक, आर्यसमाज बी-1, जनकपुरी के अतिरिक्त राष्ट्र-किंकर के भी अध्यक्ष रहे। सदा सक्रिय रहने वाले कथूरिया जी अनेक साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े थे। राष्ट्रवादी विचारधारा से जुड़े होने के कारण उन्हें आपातकाल में जेल भी जाना पड़ा। उनकी श्रद्धांजलि सभा में अनेक आर्य सँन्यासी, साहित्यकार, विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। डॉ सुंदरलाल कथूरिया मूर्धन्य साहित्यकार, सहृदय कवि, ओजस्वी वक्ता एवं प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान थे उनके निधन से समाज एवं परिवार की अपूरणीय क्षति हुई है। पद्मश्री डॉ. रमाकांत शुक्ल, पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि, डॉ. अरुण भगत, डॉ. रामशरण गौड़, डॉ. राहुल, स्वामी आर्यवेश जी सारस्वत, मोहन मनीषी, आर्य कै. अशोक गुलाटी, ओम सपरा, अनिल आर्य, उत्तमायति, सुखदेव तपस्वी व अन्य संस्थाओं के लोगों द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

- **प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. भवानीलाल भारतीय का निधन :** आर्य जगत के उच्चकोटि के वयोवृद्ध विद्वान प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. भवानी लाल भारतीय जी का दिनांक 11 सितम्बर 2018 का रात्रि में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 12 सितम्बर को सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। डॉ. भारतीय जी आर्य जगत के चमकते हुए नक्षत्र थे। उन्होंने ईश्वर, वेद, ऋषि दयानन्द, आर्य समा सहित अनेकों महत्वपूर्ण विषयों पर उच्चकोटि के ग्रंथों की रचना की। आर्यजगत् की प्रत्येक पत्रिका में उनके विद्वतापूर्ण लेख प्रकाशित होते थे। उनकी लेखनी से सैकड़ों लोगों ने प्रेरणा प्राप्त की। डॉ. भारतीय जी ने जो विस्तृत साहित्य लिखा है उसका प्रकाशन होना चाहिए। डॉ. भवानी लाल भारतीय के निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति करना आसान नहीं है। सम्पूर्ण आर्य जगत की तरफ से श्री भवानी लाल भारतीय जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

■ **प्रबंध सम्पादक**

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 24 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTBI0SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221

क्यों फैल रही है टीबी

- टीबी को फेफड़ों का रोग भी कहते हैं, यह बैक्टीरिया के संक्रमण के कारण फेफड़े सहित रक्त में शरीर के अन्य भागों में फैलती है
- टीबी के कीटाणु उस धूल में भी पाए जाते हैं जिसमें रोगी की लार, श्लेष्मा, नाक, थूक आदि मिली रहती है

आज विश्व जिस तरह से तक्की कर रहा है उसी स्पीड से देश-दुनिया में टीबी, कैंसर, शुगर, बीपी, स्ट्रोक आदी तेजी से बढ़ रहे हैं। क्या कारण है कि यह सारी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। पता चला है जिस तरह से हम तरक्की कर रहे हैं उसी तेजी से बीमारियां भी बढ़ रही हैं यानी हमारी जीवनशैली में तेजी से बदलाव आ रहा है। भोजन में बदलाव यानी समय पर भोजन नहीं करना व फास्टफूड पर ज्यादा रहना। रहन-सहन में बदलाव। समय पर ना सोना। देर रात तक काम व मौज-मस्ती करते रहना। अराम-तलबी को बढ़ावा देना आदी हैं। अभी हमारे देश में सबसे तेजी से टीबी-कैंसर व शुगर के ज्यादा रोगी हो रहे हैं। साधारणतया लोग टीबी और कैंसर के नाम से डर जाते हैं। इसमें से सबसे ज्यादा टीबी छूत की बीमारी है जो धीरे-धीरे बढ़ती है। यदि इसे प्रारंभिक अवस्था में ही ना रोका गया तो यह जानलेवा साबित हो जाती है। टीबी को फेफड़ों का रोग भी कहते हैं।

कैसे फैलती है टीबी :

होता क्या है जब हम सांस लेते हैं तो टीबी के बैक्टीरिया हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। यह बैक्टीरिया किसी रोगी के खांसने, बात करने, छींकने, थूकने और मुंह खोलकर बोलने की वजह से बैक्टीरिया के रूप में कई घंटों तक हवा में रहते हैं और स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में सांस लेते समय प्रवेश कर जाते हैं।

शरीर में प्रवेश करने के बाद :

यह शरीर में प्रवेश करने के बाद इंसान के शरीर में रोग उत्पन्न करते हैं। रोगी को रोग ग्रसित करने के बाद प्रभावित अंगों में छोटी-छोटी गांठे बना देते हैं। इसका उपचार ना होने पर धीरे-धीरे प्रभावित अंग अपना कार्य करना बंद कर देते हैं इससे रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

ये टीबी को फैलने से रोकते हैं

लहसुन : लहसुन की दो-तीन कलियां सुबह कच्चा खाने से शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है साथ ही टीबी और शुगर व हाई बीपी में आराम भी मिल सकता है। लहसुन के रस में आधा चम्मच शहद मिलाकर चाटें तथा लहसुन के रस को सूंघें। यह रस फेफड़ों को मजबूत करता है।

शहद व मक्खन : शहद व मक्खन टीबी को रोकते हैं। सौ ग्राम मक्खन लेकर उसमें पचीस ग्राम शहद मिलाकर रोजाना सेवन करने से ताकत मिलती है।

करेले का चूर्ण व शहद : करेले का एक चुटकी चूर्ण शहद के साथ चाटने के बाद ऊपर से वासावलेह का सेवन करना चाहिए।

केला : केला खाने से टीबी के रोगियों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

अंगूर : टीबी रोगी रोजाना अंगूर का सेवन जरूर करें।

कहां-कहां पाए जाते हैं टीबी के कीटाणु : टीबी के कीटाणु उस धूल में भी पाए जाते हैं जिसमें रोगी की लार, श्लेष्मा, नाक, थूक आदि मिली रहती है। संक्रमित पानी तथा भोजन से भी ये मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इसके अलावा बीमार दुधारू पशुओं का दूध पीने से भी टीबी के बैक्टीरिया व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। भारत में भी इस बीमारी से हर तीन? मिनट में दो मरीज अपना दम तोड़ देते हैं।

गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा गीत प्रस्तुतिकरण की झलकियां।

दिल्ली के पूर्व स्पीकर के जन्मदिन पर 'सत्यार्थ प्रकाश और विश्ववारा संस्कृति भेंट करते हुए आर्य कैप्टन अशोक गुलाटी।

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा

का

भव्य वार्षिकोत्सव

बुधवार दिनांक 05 से रविवार 09 दिसम्बर 2018

स्थानः बी-69, सैक्टर-33, नोएडा

दूरभाष-01202505731, 9899379304

धर्मानुरागी सज्जनों एवं देवियों! प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज नोएडा के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यों का विशाल मेला लग रहा है। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वानों, सन्यासियों एवं आर्य नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। अतएव विनम्र प्रार्थना है कि इस अविस्मरणीय आध्यात्मिक आनन्द के लिए अवश्य पधारें।

कार्यक्रम

प्रभात फेरी	: बुधवार 5 से शनिवार 8 दिसम्बर 2018 प्रातः 5.30 बजे से 6.15 बजे तक नोएडा के विभिन्न क्षेत्रों में
ऋग्वेद पारायण महायज्ञ	: बुधवार 5 से शनिवार 8 दिसम्बर 2018 प्रातः 7.00 से 8.00 बजे तक यज्ञब्रह्मा-आचार्य जयेन्द्र कुमार, ऋत्विक-श्रीमती गायत्री मीना, श्री मोहन प्रसाद आर्य
वेदकथा	: डा. महावीर अग्रवाल (पूर्व कुलपति- देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार) बुधवार 05 से शनिवार 08 दिसम्बर 2018; प्रातः 8.30 से 9.15 बजे तक तथा सांय 8 से 9 बजे तक; वेदपाठी-आर्ष गुरूकुल नोएडा
भजन प्रस्तुति	: श्री दिनेश आर्य 'पथिक' 5 दिसम्बर से 8 दिसम्बर प्रातः 8.00 से 8.30 बजे तक, सांय 7 से 8 बजे तक
आर्य महिला सम्मेलन	: 8 दिसम्बर शनिवार दोपहर 3 से 5.30 बजे तक
सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन	: 8 दिसम्बर शनिवार सांय 6.30 से 8 बजे तक
राष्ट्र भक्ति एवं क्रान्तिकारी गीतों का कार्यक्रम	: 8 दिसम्बर शनिवार सांय 8 से 9 बजे तक
101 कुण्डीय विश्व शान्ति सौहार्द महायज्ञ	: 9 दिसम्बर रविवार 2018 प्रातः 8 से 9 बजे तक
मुख्य समारोह	: 9 दिसम्बर रविवार 2018 प्रातः 9.30 से 1.30 बजे तक *महर्षि दयानन्द उपकार एवं गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन*

"सम्मान, धन्यवाद, शान्तिपाठ एवं ऋषिभोज"

आमंत्रित सन्यासीवृन्द, विद्वान् एवं आर्य नेता

स्वामी आर्यवेश जी-अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, स्वामी श्री ठा. विक्रम सिंह जी- राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री सुनील चौधरी सपा नेता, श्री माया प्रकाश त्यागी, डा. अमिता चौहान-चेयरपर्सन एमिटी शिक्षण संस्थान, श्री आनन्द चौहान-निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान, श्री डी.के. गर्ग, स्वामी विश्वानन्द जी, डॉ. शशि प्रभा कुमार पूर्व उपकुलपति सांची विश्वविद्यालय एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत अकादमी दिल्ली, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री-उ०प्र० प्रतिनिधि सभा, डॉ महेश विद्यालंकार-सुविख्यात वैदिक प्रवक्ता, डॉ. योगानन्द शास्त्री- पूर्व विधान सभा अध्यक्ष, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, डॉ. बी.एस. चौहान, श्री सुधीर सिंघल-मनोहर लाल सर्राफ एण्ड संस, डॉ. अनिल आर्य-अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, श्री सुधीर मिढ्ढा-उद्योगपति, श्री विनोद बुद्धिराजा-रोटरी क्लब नोएडा, श्री सुधीर वालिया-रोटरी क्लब नोएडा, प्रशासनिक अधिकारी नोएडा

आप सहयोग कर सकते हैं

1. नगद दान राशी अथवा चेक देकर 2. ऋषि लंगर हेतु खाद्य सामग्री एवं घी देकर 3. यज्ञ की संपूर्ण व्यवस्था कराकर 4. कार्यक्रम में आमंत्रित और उपस्थित होकर 5. पधारे हुए सन्यासियों और विद्वानों की सेवा करके 6. प्रतियोगिता में पुरस्कारों को प्रायोजित करके।

– निवेदक –

श्री गायत्री मीना	डॉ० जयेन्द्र कुमार	जितेन्द्र आर्य	ओमवती गुप्ता	रविशंकर अग्रवाल	आदर्श बिश्नोई	आर.एल. लवानिया	संतोष लाल
प्रधान	*प्राचार्य*	*मंत्री*	*प्रधाना*	*उपप्रधान*	*मंत्राणी*	*कोषाध्यक्ष*	*कोषाध्यक्षा*

संरक्षक : श्री आनन्द चौहान (निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान), ब्रि. अनिल अदलक्खा, श्रीमती सुकेश तायल
(समस्त अधिकारी, कार्यकारिणी, संरक्षक गण एवं सदस्यगण)

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्यसमाज नोएडा का मुखपत्र
मासिक पत्रिका-"विश्ववारा-संस्कृति"
मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221